कानपुर, सोमवार, 6 अप्रैल, 2026
वर्षः 03, अंकः 86, पृष्ठः 8+4

सच्चाई के दम पर जोश के साथ...

swarajindia2023@gmail.com swarajindianews swarajindianews

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com
Website: www.swarajindianews.com

सांध्यकालीन समाचार पत्र

# स्वराज इंडिया

इनसाइड दुनिया पर मंडराता परमाणु खतरा...>Pg12
किडनी कांड का 'हॉस्पिटल सिंडिकेट' बेनकाब...>Pg03

मूल्यः ₹

## विधानसभा में कार घुसी, स्पीकर की गाड़ी के पास संदिग्ध पैकेट मिला

# दिल्ली की सुरक्षा पर तमाचा!

**स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो**

**नई दिल्ली।** राजधानी दिल्ली के सबसे सुरक्षित माने जाने वाले परिसरों में शामिल विधानसभा भवन में सोमवार को हुई एक गंभीर सुरक्षा चूक ने पूरे सुरक्षा तंत्र को कटघरे में खड़ा कर दिया है। एक अज्ञात यूपी नंबर की कार तेज रफ्तार से पहुंची और मुख्य गेट को तोड़ते हुए सीधे परिसर के भीतर घुस गई। इस घटना ने न केवल मौके पर मौजूद सुरक्षाकर्मियों में अफरा-तफरी मचा दी, बल्कि देश की राजधानी में संवेदनशील संस्थानों की सुरक्षा व्यवस्था पर भी बड़े सवाल खड़े कर दिए हैं।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, कार बिना किसी प्रभावी रोक-टोक के सुरक्षा घेरे को भेदते हुए अंदर तक पहुंच गई। यह स्थिति अपने आप में दर्शाती है कि प्रवेश द्वार पर मौजूद सुरक्षा परतें या तो सक्रिय नहीं थीं या फिर उनमें गंभीर खामियां थीं। घटना के कुछ ही मिनटों के भीतर स्थिति और ज्यादा गंभीर हो गई जब जानकारी मिली कि वाहन सवार व्यक्ति ने विधानसभा अध्यक्ष विजेंद्र गुप्ता की गाड़ी के पास एक संदिग्ध वस्तु रख दी है।

इस सूचना के फैलते ही पूरे परिसर में हड़कंप मच गया। तत्काल सुरक्षा अलर्ट जारी किया गया और पूरे इलाके को खाली कराते हुए सील कर दिया गया। मौके पर तुरंत दिल्ली पुलिस, बम निरोधक दस्ता और अन्य सुरक्षा एजेंसियों को बुलाया गया। संदिग्ध वस्तु की जांच शुरू की गई और एहतियातन पूरे परिसर में सर्च ऑपरेशन चलाया गया।

प्रारंभिक जांच में सुरक्षा एजेंसियां इस घटना को बेहद संवेदनशील मानते हुए हर पहलू पर जांच कर रही हैं। यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि यह केवल एक लापरवाही का मामला है या फिर इसके पीछे कोई बड़ी साजिश छिपी हुई है। पुलिस ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगालनी शुरू कर दी है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि कार किस समय परिसर के पास पहुंची और सुरक्षा में चूक कहां हुई।

सुरक्षा विशेषज्ञों का मानना है कि इस तरह की घटना हाई-सिक्योरिटी जोन में 'मल्टी-लेयर सिक्योरिटी फेल्योर' का संकेत देती है। आमतौर पर ऐसे संवेदनशील परिसरों में बैरिकेडिंग, वाहन जांच, पहचान सत्यापन और तैनात सुरक्षाकर्मियों की कई परतें होती हैं। इसके बावजूद किसी वाहन का गेट तोड़कर अंदर प्रवेश कर जाना बेहद गंभीर चिंता का विषय है।

सूत्रों के मुताबिक, घटना के बाद विधानसभा परिसर और उसके आसपास के इलाकों में सुरक्षा को और कड़ा कर दिया गया है। वरिष्ठ अधिकारियों से रिपोर्ट तलब की जा सकती है और संबंधित सुरक्षाकर्मियों की जवाबदेही तय होने की संभावना भी जताई जा रही है। फिलहाल सबसे बड़ा सवाल यही है कि क्या यह केवल एक आकस्मिक घटना थी या किसी बड़े खतरे की पूर्व भूमिका। जांच एजेंसियां हर संभावित एंगल आतंकी साजिश, सुरक्षा परीक्षण या शरारती हरकत को ध्यान में रखकर जांच कर रही हैं। आने वाले दिनों में जांच के निष्कर्ष इस पूरे मामले की सच्चाई उजागर करेंगे।

### आगे क्या बदलेगा?

इस घटना के बाद हाई-सिक्योरिटी जोन में नया स्टैंडर्ड ऑपरेटिंग प्रोसीजर लागू हो सकता है। स्वचालित सुरक्षा सिस्टम, एआई आधारित निगरानी और त्वरित प्रतिक्रिया दलों की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा।

### कहां चूकी सुरक्षा?

इस घटना में सबसे बड़ा सवाल यही है कि बहु-स्तरीय सुरक्षा के बावजूद वाहन गेट तक कैसे पहुंचा। क्या बैरिकेडिंग पर्याप्त मजबूत नहीं थी या ड्यूटी पर तैनात कर्मियों की सतर्कता में कमी थी? यह 'पहली परत' की विफलता मानी जा रही है।

### क्या यह सिर्फ लापरवाही या साजिश?

संदिग्ध वस्तु मिलने से मामला और गंभीर हो गया है। यदि यह केवल लापरवाही होती, तो वाहन का प्रवेश ही मुख्य मुद्दा रहता, लेकिन वस्तु मिलने से 'टेस्ट रन' या संभावित साजिश की आशंका भी मजबूत हो जाती है।

- हाई-सिक्योरिटी जोन में सेंध से एजेंसियां अलर्ट, सीसीटीवी खंगालने के साथ साजिश के एंगल पर भी फोकस

- विधानसभा जैसे संवेदनशील स्थलों पर आमतौर पर 'नो-फोर्स एंट्री' प्रोटोकॉल लागू होता है
- वाहन जांच के लिए स्वचालित बैरियर और स्पाइक सिस्टम का उपयोग किया जाता है
- इस घटना से वीआईपी सुरक्षा और भवन सुरक्षा के बीच तालमेल पर सवाल उठे
- राजधानी में हाल के समय में संवेदनशील स्थलों की सुरक्षा समीक्षा की आवश्यकता बढ़ी
- सुरक्षा कर्मियों के प्रशिक्षण और प्रतिक्रिया समय पर भी गंभीर प्रश्न खड़े हुए

### कैसे हुई पूरी घटना

- **सुबह/दोपहरः** संदिग्ध यूपी नंबर की कार विधानसभा की ओर बढ़ी
- **कुछ ही क्षण बादः** कार ने मुख्य गेट तोड़कर परिसर में प्रवेश किया
- **तुरंत बादः** स्पीकर की गाड़ी के पास संदिग्ध वस्तु रखे जाने की सूचना
- **अलर्ट जारीः** परिसर खाली कराया गया, सुरक्षा एजेंसियां मौके पर पहुंचीं
- **जांच शुरूः** बम निरोधक दस्ता सक्रिय, सीसीटीवी फुटेज खंगाली जा रही

## आस्था पर सवालः गंगा की धारा में 'नशे की पार्टी'!

वाराणसी। धर्म और आस्था की नगरी वाराणसी में गंगा नदी के बीच नाव पर कथित शराब पार्टी का एक वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। वीडियो में कुछ युवक नाव पर सवार होकर शराब पीते, तेज आवाज में डीजे बजाते और जश्न मनाते नजर आ रहे हैं। दावा किया जा रहा है कि यह घटना रमजान माह में इफ्तार के बाद की है। हालांकि, इस वीडियो की आधिकारिक पुष्टि स्वराज इंडिया नहीं करता है।

जानकारी के मुताबिक, यह मामला अस्सी घाट क्षेत्र से जुड़ा बताया जा रहा है। स्थानीय लोगों और नाविकों का कहना है कि वीडियो में दिख रहे युवक इसी इलाके से जुड़े हो सकते हैं। कुछ लोगों ने यह भी आरोप लगाया है कि युवक बड़ी शीतला माता मंदिर में बधावा चढ़ाने जा रहे थे और उसी दौरान गंगा नदी में इस तरह की पार्टी की गई।

- इफ्तार के बाद की बताई जा रही घटना, अस्सी घाट क्षेत्र से जुड़ा मामला
- प्रतिबंध के बावजूद नियमों की खुलेआम अनदेखी, नाविकों में आक्रोश

गौरतलब है कि जिला प्रशासन द्वारा गंगा नदी में नाव पर डीजे बजाने, शराब सेवन करने या किसी भी प्रकार के आयोजन पर सख्त प्रतिबंध लगाया गया है। इसके बावजूद वायरल वीडियो में जिस तरह खुलेआम नियमों का उल्लंघन होता दिख रहा है, उसने प्रशासनिक व्यवस्थाओं पर सवाल खड़े कर दिए हैं। यदि वीडियो सही पाया जाता है, तो यह सीधे तौर पर प्रशासनिक आदेशों की अवहेलना मानी जाएगी।

एआई जेनरेटेड प्रतीकात्मक फोटो

इस घटना को लेकर नाविक समुदाय में भारी नाराजगी है। नाविकों का कहना है कि मां गंगा उनके लिए केवल नदी नहीं, बल्कि आस्था और आजीविका का आधार हैं। ऐसे में इस तरह की गतिविधियां धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने के साथ-साथ काशी की सांस्कृतिक गरिमा को भी धूमिल करती हैं। नाविकों ने प्रशासन और पुलिस से मांग की है कि दोषियों की पहचान कर उनके खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं दोबारा न हों।

वीडियो के वायरल होने के बाद आम लोगों में भी आक्रोश देखा जा रहा है। लोगों का कहना है कि जब प्रशासन ने स्पष्ट रूप से ऐसे आयोजनों पर रोक लगा रखी है, तो फिर गंगा नदी के बीच इस तरह की पार्टी कैसे संभव हो पाई। इससे निगरानी व्यवस्था और कानून-व्यवस्था पर भी सवाल उठ रहे हैं।

फिलहाल पुलिस और प्रशासन वीडियो की जांच में जुटे हैं। अधिकारियों का कहना है कि वायरल वीडियो के आधार पर युवकों की पहचान की जा रही है और सच्चाई सामने आने के बाद नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी। धार्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण गंगा तट पर इस तरह की घटनाएं आस्था और अनुशासन के बीच संतुलन पर सवाल खड़े करती हैं। हर दिन हजारों श्रद्धालु यहां पूजा-अर्चना और स्नान के लिए पहुंचते हैं। ऐसे में इस तरह के दृश्य न केवल धार्मिक मर्यादाओं का उल्लंघन हैं, बल्कि समाज में गलत संदेश भी देते हैं। अब देखना होगा कि प्रशासन इस मामले में कितनी तत्परता और सख्ती दिखाता है।

# 36 घंटे से अंधेरे में डूबी 30 लाख की आबादी, सड़क पर फूटा जनाक्रोश

## आंधी-बारिश के बाद चरमराई बिजली व्यवस्था सबस्टेशन घेरकर किया क्षेत्रीय लोगों ने प्रदर्शन

प्रमुख संवाददाता/स्वराज इंडिया

**कानपुर। तेज आंधी और बारिश के बाद शहर की बिजली व्यवस्था पूरी तरह ध्वस्त हो गई है, जिससे पैदा हुआ संकट अब जनआक्रोश में बदलता नजर आ रहा है। शनिवार शाम से ठप पड़ी बिजली सप्लाई 36 घंटे बाद भी बहाल न होने से लाखों लोग अंधेरे और पानी की किल्लत में जिंदगी गुजारने को मजबूर हैं। हालात इतने बिगड़ गए कि सोमवार को लोगों का गुस्सा सड़कों पर फूट पड़ा और उन्होंने सर्वोदय नगर स्थित आरटीओ सबस्टेशन का घेराव कर जोरदार प्रदर्शन किया।**

बताया जा रहा है कि आंधी-बारिश के दौरान शहर के कई इलाकों में बिजली के खंभे और पेड़ गिर गए, जिससे आपूर्ति पूरी तरह बाधित हो गई। लेकिन सबसे बड़ी समस्या यह रही कि इतने लंबे समय बीतने के बावजूद मरम्मत कार्य में अपेक्षित तेजी नहीं दिखाई गई। नतीजतन, लगभग 30 लाख की आबादी लगातार बिजली और पानी के संकट से जूझती रही।

रविवार का पूरा दिन और रात अंधेरे में गुजारने के बाद सोमवार सुबह भी जब हालात नहीं सुधरे, तो लोगों का धैर्य जवाब दे गया। कामकाज पर निकलने की तैयारी कर रहे नागरिकों को जैसे ही यह एहसास हुआ कि बिजली अभी भी बहाल नहीं हुई है, उन्होंने विरोध का रास्ता अपना लिया। सुबह करीब 11 बजे बड़ी संख्या में लोग आरटीओ सबस्टेशन पहुंचे और विभाग के खिलाफ नारेबाजी करते हुए घेराव कर दिया।

प्रदर्शन कर रहे लोगों का आरोप है कि शनिवार शाम से बिजली गुल है, लेकिन विभाग की ओर से न तो गिरे हुए पेड़ों को हटाने में तत्परता दिखाई गई और न ही टूटे खंभों को दुरुस्त करने में कोई गंभीरता नजर आई। मौके पर कोई जिम्मेदार अधिकारी मौजूद न होने से लोगों का आक्रोश और बढ़ गया।

लोहारन बट्टा समेत आसपास के क्षेत्रों के निवासियों ने बताया कि बिजली आपूर्ति बाधित होने से जलापूर्ति भी ठप हो गई है। घरों में पानी खत्म हो चुका है, जिससे पीने और दैनिक जरूरतों के लिए लोग परेशान हैं। गर्मी के मौसम में यह संकट और भी गंभीर रूप ले चुका है। बच्चों, बुजुर्गों और बीमार लोगों को सबसे ज्यादा दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। स्थानीय लोगों का कहना है कि यह सिर्फ एक दिन की समस्या नहीं है, बल्कि हर बार आंधी-बारिश के बाद यही स्थिति बन जाती है। बिजली व्यवस्था की जर्जर हालत और मरम्मत कार्य में सुस्ती ने इस समस्या को स्थायी रूप दे दिया है। लोगों ने सवाल उठाया कि आखिर कब तक वे ऐसी अव्यवस्था को झेलते रहेंगे।इस पूरे घटनाक्रम ने बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। आपदा की स्थिति में त्वरित कार्रवाई और वैकल्पिक व्यवस्था की कमी साफ नजर आई। यदि समय रहते गिरे हुए पेड़ों और खंभों को हटाने का काम तेज किया जाता, तो हालात इतने खराब नहीं होते। प्रदर्शनकारियों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही बिजली और पानी की आपूर्ति बहाल नहीं की गई, तो आंदोलन और उग्र रूप ले सकता है। उन्होंने जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग भी उठाई है।

### समस्या का बड़ा पहलू

यह घटना सिर्फ एक तकनीकी खराबी नहीं, बल्कि शहर की बुनियादी व्यवस्था की कमजोरी को उजागर करती है। बढ़ती आबादी के अनुपात में बिजली ढांचा मजबूत नहीं किया गया है। आपदा प्रबंधन की तैयारियां भी कागजों तक सीमित नजर आती हैं। हर बार मौसम की मार के बाद शहर अंधेरे में डूब जाता है और लोग बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष करने को मजबूर हो जाते हैं। स्पष्ट है कि यदि समय रहते बिजली ढांचे को मजबूत करने, त्वरित मरम्मत व्यवस्था विकसित करने और जवाबदेही तय करने जैसे कदम नहीं उठाए गए, तो ऐसे संकट भविष्य में और गंभीर रूप ले सकते हैं। फिलहाल, कानपुर के लाखों लोग राहत का इंतजार कर रहे हैं लेकिन सवाल यही है कि आखिर कब तक?

# नेयवेली पावर प्लांट की तीसरी यूनिट तैयार 1980 मेगावाट उत्पादन की राह साफ

## » 660 मेगावाट यूनिट का सफल ग्रिड सिंक्रोनाइजेशन जल्द शुरू होगा बिजली उत्पादन

प्रमुख संवाददाता/ स्वराज इंडिया

**कानपुर। नेयवेली पावर प्लांट से जुड़ी बड़ी उपलब्धि सामने आई है। 1980 मेगावाट क्षमता वाले इस प्लांट की तीसरी यूनिट का सफल ग्रिड सिंक्रोनाइजेशन कर लिया गया है, जिसके बाद जल्द ही इससे विद्युत उत्पादन शुरू होने की उम्मीद है। प्लांट की दो यूनिटें पहले से ही संचालित हैं और अब तीसरी यूनिट के जुड़ने से उत्पादन क्षमता पूरी तरह सक्रिय होने की दिशा में बड़ा कदम माना जा रहा है।**

प्लांट प्रबंधन के अनुसार, 660 मेगावाट क्षमता वाली तीसरी यूनिट का 765 केवी ग्रिड के साथ 'टीजी रोलिंग एवं सिंक्रोनाइजेशन' सफलतापूर्वक एक ही प्रयास में पूरा किया गया।

यह उपलब्धि स्टीम ब्लोइंग टेस्ट के तुरंत बाद हासिल की गई, जो कमर्शियल ऑपरेशन

डिक्लेरेशन (सीओडी) से पहले की महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। इससे पहले पहली यूनिट 12 दिसंबर 2024 और दूसरी यूनिट 8 दिसंबर को शुरू हो चुकी है।

तीसरी यूनिट के चालू होते ही प्लांट से प्रतिदिन करीब 47.52 मिलियन यूनिट बिजली उत्पादन होगा, जिससे देश की बढ़ती ऊर्जा मांग को पूरा करने में बड़ी मदद मिलेगी। एनएलसी इंडिया लिमिटेड और उत्तर प्रदेश राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड के संयुक्त उपक्रम एनयूपीपीएल द्वारा संचालित यह परियोजना कोयले की आपूर्ति के लिए झारखंड के पचवारा साउथ ब्लॉक पर निर्भर है, जहां खनन कार्य शुरू हो चुका है।प्रबंधन का कहना है कि वित्तीय वर्ष 2026-27 की पहली तिमाही तक यह पावर प्लांट पूरी क्षमता से उत्पादन करने लगेगा, जिससे ऊर्जा क्षेत्र में स्थिरता और आपूर्ति में मजबूती आएगी।

# भाजपा की गौरवशाली यात्रा में कार्यकर्ताओं के त्याग का अहम योगदान

प्रमुख संवाददाता/स्वराज इंडिया

कानपुर। भारतीय जनता पार्टी के 47वें स्थापना दिवस के अवसर पर नौबस्ता स्थित क्षेत्रीय मुख्यालय में भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यालय परिसर को आकर्षक ढंग से सजाया गया था, जिससे पूरे वातावरण में उत्सव का माहौल दिखाई दे रहा था। सुबह 11 बजे से ही सैकड़ों कार्यकर्ता कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने लगे और पूरे परिसर में उत्साह का वातावरण बना रहा।कार्यक्रम की शुरुआत क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुई। ध्वजारोहण के बाद कार्यकर्ताओं ने भारत माता की जय÷ और भाजपा जिंदाबाद के नारे लगाए, जिससे पूरा परिसर गूंज उठा। इसके साथ ही कार्यकर्ताओं ने एक-दूसरे को मिठाई खिलाकर स्थापना दिवस की शुभकामनाएं दीं।कार्यक्रम में क्षेत्रीय अध्यक्ष प्रकाश पाल ने कहा कि वर्ष 1980 में स्थापना के बाद से भाजपा ने जनसेवा के संकल्प के साथ निरंतर प्रगति की है। उन्होंने कहा कि आज पार्टी जिस ऊंचाई पर पहुंची है, वह करोड़ों कार्यकर्ताओं के त्याग, तपस्या और समर्पण का परिणाम है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भाजपा अंत्योदय के लक्ष्य को लेकर निरंतर आगे बढ़ रही है और समाज के अंतिम व्यक्ति तक विकास पहुंचाने के लिए प्रतिबद्ध है। क्षेत्रीय उपाध्यक्ष एवं महिला आयोग की सदस्य अनीता गुप्ता, क्षेत्रीय मंत्री पवन प्रताप सिंह, पूर्व जिला अध्यक्ष राधेश्याम पांडेय, विनोद शुक्ला, जिला पंचायत अध्यक्ष स्वप्निल वरुण, ग्रामीण जिला अध्यक्ष उपेंद्र पासवान, शिवराम सिंह, क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी अनूप अवस्थी, पिछड़ा मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष जय

प्रकाश कुशवाहा, पूर्व विधायक रघुनंदन भदौरिया, के.के. सचान, विकास दुबे, मोहित सोनकर, आलोक शुक्ला, पवन पांडे और ऋषभ शुक्ला सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता मौजूद रहे।

# उदयपुर पंचायत में गंदगी का अंबार स्वच्छता अभियान के दावों पर सवाल

## मुख्य मार्ग पर गोबर के ढेर और जलभराव से जनजीवन प्रभावित, शिकायतों के बावजूद जिम्मेदार बेपरवाह

प्रमुख संवाददाता/ स्वराज इंडिया

कानपुर। बिधनू ब्लॉक के उदयपुर ग्राम पंचायत में स्वच्छता व्यवस्था की बदहाली ने ग्रामीणों का जीना दूभर कर दिया है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे स्वच्छता अभियान के बड़े-बड़े दावे यहां धरातल पर पूरी तरह फेल नजर आ रहे हैं। गांव के मुख्य मार्ग से लेकर अंदरूनी गलियों तक गंदगी का अंबार लगा है, जिससे लोगों को रोजमर्रा की जिंदगी में भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है।

गांव के प्रमुख रास्ते पर जगह-जगह गोबर के ढेर लगे हुए हैं, जिनके कारण नालियों का पानी ठीक से निकल नहीं पा रहा। सबसे ज्यादा परेशानी स्कूली बच्चों को हो रही है, जिन्हें रोज इसी रास्ते से होकर स्कूल जाना पड़ता है।ग्रामीणों का कहना है कि गांव की अधिकांश नालियां वर्षों से साफ नहीं कराई गई हैं। जाम नालियों के कारण गंदा पानी सड़कों पर बहता रहता है, जिससे दुर्गंध फैल रही है और संक्रामक बीमारियों का खतरा लगातार बढ़ रहा है। मच्छरों की बढ़ती संख्या ने हालात को और चिंताजनक बना दिया है, जिससे डेंगू, मलेरिया जैसी बीमारियों की आशंका बनी हुई है। स्थानीय लोगों ने बताया कि इस समस्या को लेकर कई बार ग्राम पंचायत सचिव लवकुश वर्मा से शिकायत की गई, लेकिन कोई ठोस कार्रवाई नहीं की गई। वहीं ग्राम प्रधान सफाई व्यवस्था की जिम्मेदारी सचिव पर डाल रहे हैं। दोनों के बीच जिम्मेदारी को लेकर चल रहे टकराव का खामियाजा सीधे ग्रामीणों को भुगतना पड़ रहा है।ग्रामीणों में इस लापरवाही को लेकर भारी नाराजगी है। उनका कहना है कि अगर जल्द ही सफाई व्यवस्था में सुधार नहीं किया गया, तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे। लोगों का यह भी आरोप है कि पंचायत स्तर पर सफाई के लिए आने वाले बजट का सही उपयोग नहीं हो रहा है। स्थिति की गंभीरता को देखते हुए अब ग्रामीणों की नजरें जिला प्रशासन पर टिकी हैं। लोगों को उम्मीद है कि प्रशासन जल्द ही मामले का संज्ञान लेकर जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करेगा और गांव में स्वच्छता व्यवस्था को दुरुस्त कराया जाएगा।

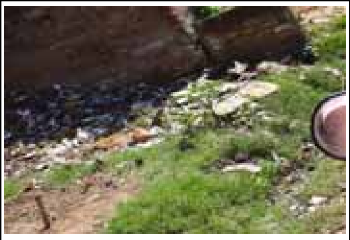

- गांव में सफाई कर्मचारियों की नियमित उपस्थिति पर सवाल
- नालियों की सफाई के लिए कोई तय समय-सारणी नहीं
- जलभराव से सड़कें भी तेजी से खराब हो रही हैं
- ग्रामीणों में बीमारी फैलने का दिन पर दिन बढ़ता डर
- प्रशासनिक निगरानी की कमी से समस्या लगातार गहराती जा रही है

# कानपुर किडनी कांड का 'हॉस्पिटल सिंडिकेट' बेनकाब

## ठगी, अवैध ट्रांसप्लांट और फर्जी नेटवर्क की गहराती साजिश

**स्वराज इंडिया फालोअप**

मुख्य संवाददाता, स्वराज इंडिया

**कानपुर।** कानपुर का चर्चित किडनी कांड अब एक ऐसे भयावह मोड़ पर पहुंच गया है, जहां यह साफ होता जा रहा है कि यह मामला किसी एक अस्पताल, एक डॉक्टर या कुछ दलालों तक सीमित नहीं, बल्कि एक संगठित 'हॉस्पिटल सिंडिकेट' का हिस्सा है। जैसे-जैसे पुलिस जांच आगे बढ़ रही है, वैसे-वैसे इस रैकेट की परतें खुलती जा रही हैं और हर नई कड़ी पिछले खुलासों से कहीं ज्यादा चौंकाने वाली साबित हो रही है।

> ⇨ **न्यू लाइफ बेबी केयर से जुड़े नए तार, 'राजदार' परवेज की गिरफ्तारी से खुल सकते हैं कई राज**

जेल भेजे जा चुके प्रिया हॉस्पिटल एंड ट्रॉमा सेंटर के संचालक नरेंद्र सिंह उर्फ नंदू की मुश्किलें कम होने के बजाय लगातार बढ़ती जा रही हैं। अब पुलिस जांच में उसका एक और अस्पताल 'न्यू लाइफ बेबी केयर हॉस्पिटल' सामने आया है, जिसने इस पूरे कांड को और जटिल बना दिया है। आवास विकास क्षेत्र में संचालित इस अस्पताल के बारे में जो जानकारी सामने आई है, वह स्वास्थ्य विभाग की कार्यप्रणाली और निगरानी व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े करती है।

- **संगठित सिंडिकेट का संकेत:** कई अस्पतालों और दलालों का नेटवर्क
- **बिना लाइसेंस संचालन:** स्वास्थ्य विभाग की भूमिका पर सवाल
- **फर्जी मेडिकल स्टाफ:** टेक्नीशियन द्वारा सर्जरी करने जैसे गंभीर आरोप
- **डिजिटल साक्ष्य:** चैट और बैंक ट्रांजेक्शन से मजबूत केस
- **पीड़ितों की संख्या बढ़ने की आशंका:** कई मामले अब तक सामने नहीं आए
- **आर्थिक अपराध का एंगल:** करोड़ों रुपये के लेनदेन की जांच

### 'राजदार' परवेज की गिरफ्तारी: खुल सकते हैं कई बड़े राज

पुलिस को इस मामले में एक बड़ी सफलता तब मिली, जब मेरठ निवासी परवेज को गिरफ्तार किया गया। परवेज को इस पूरे रैकेट की अहम कड़ी और 'सबसे बड़ा राजदार' माना जा रहा है। पुलिस के अनुसार, परवेज का काम गिरोह को लॉजिस्टिक सपोर्ट देना था। वह ट्रांसप्लांट करने वाली टीम को एक जगह से दूसरी जगह ले जाने, दलालों और अस्पतालों के बीच तालमेल बैठाने और पूरे नेटवर्क को सक्रिय रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था। उसकी गिरफ्तारी के बाद पुलिस को उम्मीद है कि अब इस रैकेट के बाकी फरार सदस्य—जैसे अफजाल (जो खुद को डॉक्टर बताता था लेकिन असल में ओटी टेक्नीशियन है), डॉ. रोहित, डॉ. वैभव, डॉ. अमित और अन्य संदिग्धों—तक पहुंचने में मदद मिलेगी। डीसीपी पश्चिम एसएम कासिम आबिदी के अनुसार, परवेज से गहन पूछताछ जारी है और उससे कई अहम जानकारियां मिलने की संभावना है, जो इस पूरे नेटवर्क को बेनकाब कर सकती हैं।

### डिजिटल सबूतों से मजबूत हो रहा केस

जांच के दौरान पुलिस को कई महत्वपूर्ण डिजिटल साक्ष्य भी मिले हैं। किडनी बेचने वाले एक व्यक्ति के मोबाइल से व्हाट्सएप चैट बरामद हुई हैं, जिनमें डॉक्टरों और ओटी स्टाफ के बीच ट्रांसप्लांट से पहले की बातचीत के संकेत मिले हैं। इन चैट्स से यह स्पष्ट होता है कि यह पूरा खेल बेहद सुनियोजित तरीके से चलाया जा रहा था, जिसमें हर व्यक्ति की भूमिका पहले से तय थी। इसके अलावा बैंक खातों में हुए लेनदेन भी इस बात की पुष्टि करते हैं कि यह एक संगठित आर्थिक अपराध था। सीसीटीवी फुटेज, अस्पताल के रिकॉर्ड और मरीजों की फाइलों की जांच के जरिए पुलिस अब इस बात का पता लगाने की कोशिश कर रही है कि अब तक कितने अवैध ट्रांसप्लांट किए गए और इसमें कितने लोग शामिल थे।

### स्वास्थ्य व्यवस्था पर बड़ा सवाल

यह पूरा मामला अब सिर्फ एक आपराधिक जांच नहीं रह गया है, बल्कि यह देश की स्वास्थ्य व्यवस्था पर भी बड़ा सवाल खड़ा करता है। बिना पंजीकरण के अस्पताल का संचालन, फर्जी डॉक्टरों द्वारा ऑपरेशन और बिचौलियों का सक्रिय नेटवर्क ये सभी तथ्य यह दर्शाते हैं कि सिस्टम में कहीं न कहीं गंभीर खामियां हैं। अगर समय रहते इन गतिविधियों पर नजर रखी जाती, तो शायद इतने बड़े स्तर पर यह रैकेट नहीं फलता-फूलता। अब सवाल यह उठता है कि आखिर स्वास्थ्य विभाग की निगरानी व्यवस्था इतनी कमजोर क्यों रही और किसकी जिम्मेदारी तय होगी? कानपुर का यह किडनी कांड अब एक ऐसे खुलासे की ओर बढ़ रहा है, जो न केवल कई बड़े नामों को बेनकाब कर सकता है, बल्कि पूरे देश में चल रहे अवैध ट्रांसप्लांट नेटवर्क की हकीकत भी सामने ला सकता है। पुलिस के लिए यह सिर्फ एक केस नहीं, बल्कि एक ऐसे संगठित अपराध के खिलाफ लड़ाई है, जिसमें इंसानी जिंदगी को 'मुनाफे' के तराजू पर तौला जा रहा था। आने वाले दिनों में इस मामले में और भी चौंकाने वाले खुलासे होने की पूरी संभावना है।

### बिना रजिस्ट्रेशन चलता रहा अस्पताल, नंदू निकला मास्टरमाइंड

जांच में सामने आया है कि न्यू लाइफ बेबी केयर हॉस्पिटल की इमारत का किरायानामा स्वयं नंदू के नाम पर था। इतना ही नहीं, जून 2025 में अस्पताल के पंजीकरण के लिए ऑनलाइन आवेदन भी उसी ने किया था। लेकिन हैरानी की बात यह है कि पंजीकरण पूरा हुए बिना ही अस्पताल का संचालन शुरू कर दिया गया और लंबे समय तक यह खुलेआम चलता रहा। इस अस्पताल की शुरुआत में नंदू के साथ रेहान और निखिल जुड़े थे, जबकि बाद में विष्णु सिंह को भी साझेदार बनाया गया। अब पुलिस को इन सभी की भूमिका संदिग्ध लग रही है। खासकर नंदू और विष्णु सिंह के बैंक खातों में मिले संदिग्ध लेनदेन ने इस आशंका को और मजबूत कर दिया है कि यह अस्पताल भी किडनी कांड से जुड़ा हुआ था। पुलिस ने एक साझेदार को हिरासत में लेकर पूछताछ शुरू कर दी है और बाकी आरोपियों की भूमिका खंगाली जा रही है। अस्पताल के सीसीटीवी फुटेज, मरीजों के रिकॉर्ड और वित्तीय दस्तावेजों की गहन जांच की जा रही है ताकि यह पता लगाया जा सके कि यहां किस प्रकार की गतिविधियां चल रही थीं।

### 43 लाख की ठगी: 'जिंदगी' के नाम पर खेला गया खौफनाक खेल

इस पूरे मामले को और गंभीर बना दिया है पंजाब के तरनतारन निवासी बुजुर्ग मनजिंदर सिंह के आरोपों ने। उन्होंने एक वीडियो जारी कर दावा किया है कि उनसे किडनी ट्रांसप्लांट के नाम पर 43 लाख रुपये लिए गए, लेकिन न तो उन्हें किडनी मिली और न ही इलाज पूरा किया गया। मनजिंदर सिंह के अनुसार, अस्पताल से जुड़े लोगों और बिचौलियों ने उन्हें भरोसा दिलाया था कि जल्द ट्रांसप्लांट कर दिया जाएगा। इस प्रक्रिया में विक्रांत, हसन और मोहाली निवासी एक कोऑर्डिनेटर का नाम सामने आया है, जिन्होंने कथित तौर पर मिलकर उनसे यह रकम वसूली। आज स्थिति यह है कि मनजिंदर सिंह डायलिसिस के सहारे जिंदगी जीने को मजबूर हैं। उनका यह बयान "अगर मेरी मौत होती है तो इसके जिम्मेदार अस्पताल के लोग होंगे" इस पूरे कांड की अमानवीयता और संवेदनहीनता को उजागर करता है। यह मामला अब सिर्फ अवैध ट्रांसप्लांट का नहीं, बल्कि 'मरीजों की जिंदगी के साथ धोखाधड़ी' का बन चुका है, जिसमें जरूरतमंद लोगों की मजबूरी का खुलेआम फायदा उठाया गया।

# योगी का अल्टीमेटम: विकास में ढिलाई नहीं चलेगी, तय होगी जवाबदेही

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

गोरखपुर। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने विकास कार्यों में हो रही देरी पर कड़ा रुख अपनाते हुए साफ संदेश दिया है कि अब लापरवाही किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने अधिकारियों को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि परियोजनाओं में देरी या गुणवत्ता में कमी पाई गई तो संबंधित अधिकारियों और कार्यदायी संस्थाओं की जवाबदेही तय कर सख्त कार्रवाई की जाएगी। रविवार को गोरखपुर के घंटाघर स्थित मल्टीलेवल पार्किंग सह कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स के लोकार्पण के बाद गोरखनाथ मंदिर में आयोजित समीक्षा बैठक में मुख्यमंत्री ने जिले में चल रही विकास परियोजनाओं की प्रगति का गहन मूल्यांकन किया। इस दौरान कुछ योजनाओं की धीमी गति पर उन्होंने नाराजगी जाहिर की और अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिया कि कार्यों में तेजी लाते हुए तय समयसीमा में उन्हें पूरा किया जाए।

» मानसून से पहले विरासत गलियारा समेत प्रमुख परियोजनाएं पूरी करने के निर्देश

» मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का अधिकारियों को नियमित मॉनिटरिंग का सख्त आदेश

मुख्यमंत्री ने विशेष रूप से इस बात पर जोर दिया कि मानसून से पहले अधिकतम परियोजनाओं को पूरा कर लिया जाए, ताकि बारिश के दौरान आम जनता को किसी प्रकार की असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि अधूरे कार्य न केवल जनजीवन को प्रभावित करते हैं, बल्कि सरकार की प्राथमिकताओं पर भी सवाल खड़े करते हैं।

बैठक में 'विरासत गलियारा परियोजना' को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए मुख्यमंत्री ने इसे हर हाल में मानसून से पहले पूरा करने का अल्टीमेटम दिया।

उन्होंने कहा कि यह परियोजना शहर की यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने के साथ ही व्यापारिक गतिविधियों को भी नई गति देगी, इसलिए इसमें किसी भी प्रकार की ढिलाई अक्षम्य होगी।

अधिकारियों को निर्देश दिए गए कि वे सतत निगरानी रखें और कार्यदायी संस्थाओं से समयबद्ध प्रगति सुनिश्चित कराएं।

इसके साथ ही मुख्यमंत्री ने उन परियोजनाओं को भी जल्द से जल्द पूरा कर लोकार्पण के लिए तैयार करने को कहा, जिनमें दो-तिहाई से अधिक कार्य पूरा हो चुका है। गोड़धोइया नाला परियोजना, सिक्सलेन फ्लाईओवर और भटहट-बांसस्थान फोरलेन सहित विभिन्न सड़क परियोजनाओं को शीघ्र पूर्ण करने पर विशेष जोर दिया गया।

कार्यक्रम के दौरान मुख्यमंत्री ने प्रदेश में कानून-व्यवस्था को लेकर भी अपनी प्रतिबद्धता दोहराई। उन्होंने कहा कि राज्य में अपराध और अपराधियों के खिलाफ 'जीरो टॉलरेंस' की नीति पूरी सख्ती से लागू है और आगे भी जारी रहेगी। उन्होंने दो टूक कहा कि किसी भी कीमत पर गुंडों और माफियाओं को पनपने नहीं दिया जाएगा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने लगभग 63 करोड़ रुपये की लागत से बने घंटाघर स्थित शहीद बंधु सिंह मल्टीलेवल पार्किंग सह कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स और शहीद स्मारक सौंदर्यीकरण कार्य का लोकार्पण किया। साथ ही, विरासत गलियारा परियोजना के तहत पांडेयहाता कॉमर्शियल कॉम्प्लेक्स का शिलान्यास भी किया गया।

# 'सनातन धर्म संवाद' बना विवाद का केंद्र

» आयोजक पर मुकदमा, भड़काऊ भाषण और तेज लाउडस्पीकर पर कार्रवाई

» प्रशासनिक शर्तों के उल्लंघन का आरोप, ध्वनि प्रदूषण और आपत्तिजनक बयानों से बिगड़ा माहौल

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

बस्ती। उत्तर प्रदेश के बस्ती जिले में आयोजित 'सनातन धर्म संवाद' कार्यक्रम अब कानूनी शिकंजे में आ गया है। राजकीय इंटर कॉलेज परिसर में बीते महीने हुए इस आयोजन को लेकर पुलिस ने आयोजकों और कुछ वक्ताओं के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर लिया है। प्रशासन का आरोप है कि कार्यक्रम के दौरान तय नियमों का उल्लंघन किया गया, ध्वनि प्रदूषण फैलाया गया और ऐसे बयान दिए गए, जिनसे सामाजिक माहौल प्रभावित हुआ।

यह कार्यक्रम 29 मार्च को सुबह 11 बजे से शाम 4 बजे तक जीआईजी ग्राउंड में आयोजित किया गया था। इसमें धार्मिक और सामाजिक विषयों पर चर्चा के लिए बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी हुई थी। कार्यक्रम में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती की मौजूदगी भी रही, जिससे आयोजन को व्यापक पहचान मिली। हालांकि, अब यही कार्यक्रम विवादों के घेरे में है।कोतवाली पुलिस में दर्ज मुकदमे के अनुसार, आयोजक एवं अखिल भारतीय ब्राह्मण राष्ट्रीय महासभा के प्रदेश अध्यक्ष प्रशांत पांडेय सहित अन्य वक्ताओं को आरोपी बनाया गया है। कोतवाल मोतीचंद राजभर की तहरीर पर यह कार्रवाई की गई है। पुलिस का कहना है कि कार्यक्रम के लिए प्रशासन से सशर्त अनुमति ली गई थी, लेकिन मौके पर उन शर्तों का पालन नहीं किया गया। जांच में सामने आया है कि कार्यक्रम के दौरान ध्वनि विस्तारक यंत्र निर्धारित मानकों से अधिक तेज आवाज में चलाए जा रहे थे, जिससे आसपास के लोगों को असुविधा हुई। ध्वनि प्रदूषण से जुड़े नियमों का उल्लंघन स्पष्ट रूप से दर्ज किया गया है। इसके अलावा, जनपद में लागू धारा 163 बीएनएसएस 2023 के प्रावधानों का भी पालन नहीं किया गया, जो सार्वजनिक शांति बनाए रखने के लिए लागू की जाती है।सबसे गंभीर आरोप कार्यक्रम में दिए गए कुछ बयानों को लेकर हैं। पुलिस के मुताबिक, कुछ वक्ताओं ने ऐसे भाषण दिए, जिनसे समाज में असहजता और तनाव की स्थिति उत्पन्न हो सकती थी। हालांकि, इन बयानों की प्रकृति और उनकी जांच अभी जारी है। इसके साथ ही कार्यक्रम में भीड़ प्रबंधन और सुरक्षा मानकों को लेकर भी सवाल उठाए गए हैं, जिससे प्रशासन की चिंता और बढ़ गई है। फिलहाल इस पूरे मामले की जांच उपनिरीक्षक अजय सिंह को सौंपी गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई तय की जाएगी और यदि आरोप सही पाए जाते हैं तो संबंधित लोगों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

सातनपुर मंडी में आलू समस्या को लेकर चर्चा करते किसान

**आलू किसानों की टूटी कमर, अब सड़क पर उतरे अन्नदाता**

# 'आलू किसान बचाओ यात्रा' से सरकार को जगाने की कोशिश

» मंडी से राजभवन तक गूंजेगी किसानों की आवाज, लागत भी नहीं निकलने से गहराया संकट

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

फर्रुखाबाद। कभी मुनाफे की फसल माने जाने वाले आलू ने इस बार किसानों के लिए बर्बादी का रूप ले लिया है। लागत बढ़ती गई, लेकिन बाजार में दाम इतने गिर गए कि किसानों की मेहनत मिट्टी में मिलती नजर आ रही है। हालात इतने बदतर हो चुके हैं कि अब किसान और आलू कारोबार से जुड़े लोग मजबूर होकर सड़कों पर उतरने को विवश हो गए हैं। इसी कड़ी में 7 अप्रैल को ÷आलू किसान बचाओ यात्रा÷ फर्रुखाबाद की सातनपुर मंडी समिति से लखनऊ के लिए रवाना होगी।सोमवार को मंडी परिसर में आयोजित बैठक में किसानों और व्यापारियों ने एक सुर में कहा कि बार-बार सरकार से गुहार लगाने के बावजूद उनकी समस्याओं की अनदेखी की जा रही है। आलू की लागत लगातार बढ़ रही है—बीज, खाद, सिंचाई और भंडारण का खर्च आसमान छू रहा है—लेकिन मंडियों में कीमतें इतनी गिर चुकी हैं कि किसान कर्ज में डूबते जा रहे हैं।बैठक में तय किया गया कि किसान नेता अशोक कटियार के नेतृत्व में यह यात्रा 7 अप्रैल को सुबह 11 बजे सतीश वर्मा 'नेताजी' के प्रतिष्ठान से हरी झंडी दिखाकर शुरू होगी। यह यात्रा कमालगंज, गुरसहायगंज, कन्नौज, मानीमऊ और बिल्हौर होते हुए लखनऊ राजभवन पहुंचेगी। 8 अप्रैल को प्रतिनिधिमंडल राज्यपाल से मुलाकात कर आलू किसानों की बदहाल स्थिति पर विस्तृत वार्ता करेगा और ज्ञापन सौंपेगा।आढ़ती एसोसिएशन के अध्यक्ष अर्पित राजपूत, पूर्व अध्यक्ष सुधीर वर्मा, रिंकू, प्रदीप गुप्ता 'मोनी', निर्यातक सुधीर शुक्ला, मुन्ना राजपूत, परसोत्तम वर्मा, राजीव चतुर्वेदी, रामलड़ैते राजपूत, रतीराम शाक्य, विकास दुबे, अरविंद राजपूत, अन्नू गुप्ता, हरिश्चंद्र वर्मा और प्रदीप राजपूत सहित कई लोगों ने इस यात्रा को समर्थन देते हुए इसे किसानों की लड़ाई का निर्णायक कदम बताया। किसानों का साफ कहना है कि अगर जल्द ही सरकार ने न्यूनतम समर्थन मूल्य, भंडारण शुल्क में राहत और निर्यात को बढ़ावा देने जैसे ठोस कदम नहीं उठाए, तो यह संकट और गहरा जाएगा। ÷आलू किसान बचाओ यात्रा÷ अब सिर्फ एक आंदोलन नहीं, बल्कि अपने अस्तित्व को बचाने की जंग बन चुकी है।

## सम्पादकीय

# गिरावट रोकने को केंद्रीय बैंक बदले रणनीति

पश्चिमी एशिया में जारी युद्ध के फलस्वरूप उत्पन्न ऊर्जा संकट के बीच डॉलर के मुकाबले रुपये का अब तक सबसे निचले स्तर पर पहुंचना भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए बड़ी चुनौती है। निश्चित रूप से मजबूत मुद्रा भंडार होने के बावजूद रुपये पर दबाव होना, देश के सामने कई तरह मुश्किलें पैदा कर सकता है। कहा जा रहा है कि भारत फिर 2013 जैसी स्थितियों से रूबरू है। लेकिन इस बार जहां मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार है, वहीं तमाम वैश्विक उथल-पुथल के बीच भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी स्थिति 2013 के मुकाबले मजबूत है। दरअसल, वैश्विक आर्थिक अनिश्चितता के बीच विदेशी निवेशक डॉलर को मजबूत निवेश के विकल्प के रूप में देखते हैं। इसीलिए वे उभरती अर्थव्यवस्थाओं से पूंजी निकालकर अमेरिकी अर्थव्यवस्था में निवेश कर रहे हैं। जिससे डॉलर मजबूत हो रहा है और रूपये जैसी दूसरी मुद्राएं कमजोर हो रही हैं। इसकी एक वजह अमेरिकी अर्थव्यवस्था की मजबूती भी है। जिसका नकारात्मक प्रभाव भारत जैसे विकासशील देशों की मुद्राओं पर पड़ता है। यही वजह है कि एशिया में बेहद कमजोर स्थिति वाली मुद्राओं में रुपये भी शामिल है। ऐसी स्थिति में हमारे निर्यात सस्ते और आयात महंगे होने से अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल असर पड़ सकता है। एक हकीकत यह भी है कि ईरान व अमेरिका के बीच जारी युद्ध से कच्चे तेल की आपूर्ति बाधित होने व पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतें बढ़ने से भी रुपये पर दबाव बढ़ा है। इसकी एक विसंगति यह भी है कि भारत अपनी ऊर्जा जरूरतों का अधिकांश हिस्सा आयात करता है। जिसका प्रतिशत 85 फीसदी के करीब है। फलत~ तेल कंपनियां अधिक डॉलर की मांग कर रही हैं,जिसका असर रूपये की सेहत पर भी पड़ रहा है। लेकिन पिछले एक साल में रुपये के मूल्य में दस फीसदी गिरावट और डॉलर के मुकाबले उसका सर्वकालिक निम्न स्तर तक पहुचना हमारी गंभीर चिंता का विषय होना ही चाहिए।आशंका जतायी जा रही है कि यदि ईरान व अमेरिका का युद्ध और लंबा खिंचता है तो रूपये के मूल्य में और गिरावट दर्ज की जा सकती है। हालांकि, अपनी तरफ से देश के केंद्रीय बैंक ने मौद्रिक व रणनीतिक उपायों से रुपये की गिरावट को थमाने के प्रयास किए हैं, लेकिन उसका सीमित प्रभाव ही रहा है। भले ही भारत के पास सात सौ अरब डॉलर से ज्यादा का विदेशी मुद्रा भंडार हो, लेकिन उसका भी सीमित उपयोग ही रुपये के संरक्षण में हो सकता है। हालांकि, भारत के पास इतना विदेशी मुद्रा का भंडार है कि दस महीने के आयात को सहजता से संचालित किया जा सकता है। वास्तव में वैश्विक परिदृश्य में जारी उथल-पुथल से बाधित आर्थिकी और असुरक्षा के चलते डॉलर की बढ़ती मांग ने रूपये को कमजोर बनाया है। इसके बावजूद केंद्रीय बैंक के हस्तक्षेप से ही रुपये का गिरना संभल सकता है। केंद्रीय बैंक तेल कंपनियों के डॉलर के अतिरिक्त दबाव को कम करने को कदम उठा सकता है। एसबीआई की एक रिपोर्ट में सुझाव दिया गया है कि तेल कंपनियों के लिये अलग डॉलर विंडो बनाये जाने से रुपये पर अचानक पड़ने वाला दबाव कम हो सकता है। हर दिन तेल कंपनियों को भारी मात्रा में डॉलर की जरूरत होती है। यही मांग बाजार में रुपये पर अतिरिक्त दबाव बना रही है। रिपोर्ट में एक सुझाव है कि इन कंपनियों के लिए अलग डॉलर विंडो बनाई जाए। अगर ऐसा होता है, तो बाजार में डॉलर की असली मांग और सप्लाई साफ दिखेगी। इससे रुपये पर अचानक पड़ने वाला दबाव कम भी हो सकता है। आर्थिक विशेषज्ञ मानते हैं कि रुपये को 'शॉक एब्जॉर्बर' बनाकर हर दबाव को झेलने के लिये छोड़ देने की नीति पर पुनर्विचार की जरूरत है। जानकार मानते हैं कि इस दिशा में केंद्रीय बैंक को आक्रमक रणनीति अपनानी चाहिए। आवश्यकता पड़ने पर विदेशी मुद्रा भंडार का उपयोग रुपये को संबल देने में करना चाहिए। इसके जरिये टाले जा सकने वाली गिरावट रोकी जा सकती है। इसके लिये अर्थव्यवस्था में नकदी संतुलन भी जरूरी है।

# बंगाल में बढ़ती अराजकता लोकतंत्र के लिए चुनौती

निरंजन भंडारी

**नागरिक समाज सक्रिय रूप से लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए आगे नहीं आएगा, तब तक केवल प्रशासनिक उपायों से इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें कानून का शासन, संस्थाओं की स्वतंत्रता और नागरिकों की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है।पश्चिम बंगाल, जो कभी सांस्कृतिक चेतना, बौद्धिकता और राजनीतिक परिपक्वता का प्रतीक माना जाता था, आज एक ऐसे संक्रमणकाल से गुजर रहा है, जहां लोकतांत्रिक मूल्यों की जड़ें लगातार कमजोर होती प्रतीत हो रही हैं।**

जैसे-जैसे चुनाव का समय नजदीक आता जा रहा है, वैसे-वैसे राज्य में हिंसा, अराजकता अलोकतांत्रिकता और राजनीतिक असहिष्णुता की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। यह केवल राजनीतिक प्रतिस्पर्धा का परिणाम नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति घटते सम्मान और कानून व्यवस्था की गिरती स्थिति का भी द्योतक है। हाल ही में मालदा जिले में मतदाता सूची पुनरीक्षण अर्थात एसएआर को लेकर जिस प्रकार का असंतोष और तनाव देखने को मिला, वह भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया के प्रति अविश्वास को दर्शाता है। मतदाता सूची में नाम जुड़ना या हटना एक कानूनी और प्रशासनिक प्रक्रिया है, जिसके लिए स्पष्ट नियम और प्रावधान होते हैं। यदि इस प्रक्रिया को राजनीतिक चश्मे से देखा जाएगा या प्रशासनिक अधिकारियों पर दबाव बनाया जाएगा, तो निष्पक्ष चुनाव की पूरी प्रक्रिया ही संदिग्ध हो जाएगी। एसएआर प्रक्रिया में बाधक बनते हुए जिसे तरह से न्यायिक अधिकारियों को नौ घंटे तक बंधक बनाए जाने की घटना सामने आयी है, वह न केवल चिंताजनक है बल्कि लोकतंत्र के लिये एक गंभीर चेतावनी भी है। यह उस व्यापक घातक एवं विडम्बनापूर्ण प्रवृत्ति का हिस्सा है, जिसमें प्रशासनिक और न्यायिक तंत्र को भी राजनीतिक दबाव और भीड़तंत्र के आगे झुकने के लिए मजबूर किया जा रहा है। विशेष रूप से यह तथ्य कि बंधक बनाए गए अधिकारियों में महिलाएं भी शामिल थीं, इस घटना को और अधिक गंभीर बना देता है। यह न केवल कानून के शासन पर प्रश्नचिह्न लगाता है, बल्कि समाज में बढ़ती असंवेदनशीलता को भी उजागर करता है।पश्चिम बंगाल में राजनीतिक हिंसा का इतिहास नया नहीं है। 1960 और 70 के दशक में नक्सल आंदोलन के दौरान हिंसा का जो दौर शुरू हुआ था, उसने राज्य की राजनीतिक संस्कृति को गहराई से प्रभावित किया। इसके बाद वामपंथी शासन के लंबे कालखंड में भी राजनीतिक विरोधियों के प्रति असहिष्णुता और हिंसा की घटनाएं समय-समय पर सामने आती रहीं। सत्ता परिवर्तन के बाद तृणमूल कांग्रेस एवं ममता बनर्जी के शासन में यह प्रवृत्ति समाप्त नहीं हुई, बल्कि नए स्वरूप में सामने आई। यह स्पष्ट संकेत है कि समस्या केवल किसी एक दल या विचारधारा की नहीं, बल्कि पूरे राजनीतिक तंत्र में व्याप्त एक गहरे संकट की है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में, चुनावों के निकट आते ही जिस प्रकार की घटनाएं सामने आ रही हैं, वे लोकतंत्र के लिए गंभीर खतरे का संकेत देती हैं। मतदाता सूची के पुनरीक्षण जैसे संवेदनशील कार्य में लगे अधिकारियों को बंधक बनाना यह दर्शाता है कि कुछ तत्व चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। यह केवल कानून का उल्लंघन नहीं, बल्कि मतदाता की स्वतंत्रता और निष्पक्ष चुनाव के अधिकार पर सीधा हमला है।इस संदर्भ में सुप्रीम कोर्ट की सक्रियता उल्लेखनीय है। समय-समय पर न्यायालय ने राज्य सरकार को कड़े निर्देश दिए हैं और कानून व्यवस्था बनाए रखने की जिम्मेदारी की याद दिलाई है। किंतु यह भी एक चिंताजनक तथ्य है कि इन निर्देशों का जमीनी स्तर पर अपेक्षित प्रभाव नहीं दिखाई देता। इससे यह प्रश्न उठता है कि क्या राज्य प्रशासन एवं सत्तारूढ पार्टी इन निर्देशों को लागू करने में अक्षम है या इच्छुक नहीं है? यदि सर्वोच्च न्यायालय के आदेश भी प्रभावी नहीं हो पा रहे हैं, तो यह लोकतंत्र के लिए एक गंभीर चेतावनी है। चुनाव के समय बढ़ती अराजकता के पीछे राजनीतिक बौखलाहट भी एक महत्वपूर्ण कारण हो सकती है। जब किसी दल को अपनी लोकप्रियता में गिरावट का भय होता है, तो वह अक्सर लोकतांत्रिक मर्यादाओं को दरकिनार कर असंवैधानिक उपायों का सहारा लेने लगता है। पश्चिम बंगाल में भी कुछ ऐसी ही प्रवृत्तियां देखने को मिल रही हैं, प्रशासनिक कार्यों में बाधा डालने और चुनाव प्रक्रिया को प्रभावित करने के आरोप लगते रहे हैं। यदि इन आरोपों में सच्चाई है, तो यह स्थिति अत्यंत चिंताजनक है और लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के विपरीत है। नागरिक समाज सक्रिय रूप से लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा के लिए आगे नहीं आएगा, तब तक केवल प्रशासनिक उपायों से इस समस्या का समाधान संभव नहीं है। लोकतंत्र केवल चुनावों तक सीमित नहीं होता, बल्कि यह एक सतत प्रक्रिया है जिसमें कानून का शासन, संस्थाओं की स्वतंत्रता और नागरिकों की भागीदारी महत्वपूर्ण होती है। पश्चिम बंगाल की वर्तमान स्थिति इन सभी पहलुओं पर गंभीर प्रश्न खड़े करती है। यदि चुनाव प्रक्रिया ही निष्पक्ष और शांतिपूर्ण नहीं रह जाती, तो लोकतंत्र का मूल उद्देश्य ही समाप्त हो जाता है। लोकतंत्र की सबसे बड़ी शक्ति मतदाता का विश्वास होता है।

# मौजूदा माहौल में प्रवासियों को आश्वस्त करना जरूरी

ज्योति मल्होत्रा

**यदि ईरान व अमेरिका-इस्राइल युद्ध लंबा चला तो आयातित तेल व उर्वरक और महंगे होंगे। वहीं जीडीपी अनुमानों में बदलाव के संकेत भी आर्थिकी पर असर डाल सकते हैं। प्रवासियों को मुश्किलों से उबरने में मदद चाहिये। फिलहाल रसोई गैस की समस्या से प्रवासी अपने गांव लौट रहे हैं। पहले उन्हें वहीं ठहरने को आश्वस्त करें, जिसे वे घर कहते हैं।**

**ऐसे में जब भारत पश्चिम एशिया में युद्ध से पैदा हुए तेल-गैस संकट से निबटने में लगा है, प्रवासी मज़दूरों की घर वापसी शुरू हो गयी है। पंजाब से लेकर महाराष्ट्र तक, जहां भी प्रवासियों की बड़ी आबादी है, 5 किलो वाले छोटे रसोई गैस सिलेंडरों की उपलब्धता में कमी के कारण वे उत्तर प्रदेश और बिहार के अपने गांवों को लौटने को मजबूर हो रहे हैं।**

हालात हर्गिज़ वैसे नहीं जैसे मार्च 2020 में थे, जब देश में कोविड महामारी फैली थी और रातोंरात लॉकडाउन घोषित कर दिया गया था। गत सप्ताह, 'द ट्रिब्यून' के पत्रकारों - दीपकमल कौर, नीरज बग्गा और शिवानी भाकू - ने पाया कि वैसे तो हर साल बैसाखी के आसपास प्रवासी हमेशा से जाते रहे हैं, जब रबी फसल की कटाई हो चुकी होती है, मज़दूरी मिल चुकी होती है और मालिक आने वाले नए साल की खुशी से सराबोर होते हैं- वहीं एक बार फिर से क्षितिज पर संकट के बादल मंडरा रहे हैं। चिंतातुर प्रवासी जो आशंका जता रहे हैं, वह हो भी सकता है, कह रहे हैं कि यदि हो गया तब होगा। निश्चित तौर पर यह युद्ध भारत व दुनिया को अपनी बेहतरीन योजनाओं पर फिर विचार करने को मजबूर कर रहा है।देश के भीतर, मोदी सरकार रुपये की गिरती कीमत को थामकर रखने को प्रयासरत है- एक महीने पहले, 28 फरवरी को अली खामेनेई की हत्या के साथ संकट शुरू होने से पहले, भाव 90 रुपये प्रति डॉलर पर था, और पिछले हफ़्ते इसने 95 रुपये प्रति डॉलर की मनोवैज्ञानिक सीमा भी पार ली थी, जिसके बाद आंशिक वापसी भी की। तेल का दाम बढ़ने को फिलहाल थाम रखा है- भारत अपनी खपत का कम से कम 80 प्रतिशत तेल आयात करता है- लेकिन उर्वरक की कीमतें अभी से बढ़ने लगी हैं। तेल की भांतिङ्कजिसकी खपत का पांचवां हिस्सा होर्मुज़ जलडमरूमध्य से गुज़रता है -दुनियाभर में पहुंचने वाले अमोनिया और यूरिया का 25-30 प्रतिशत इस संकरे जलडमरू से होकर गुजरता है और ये दोनों उर्वरक बनाने में मुख्य घटक हैं, और खाद बनाने में इस्तेमाल होने वाली नैचुरल गैस का 20 प्रतिशत भी इसी रास्ते से आता है।ईरान यूरिया का चौथा सबसे बड़ा उत्पादक है (यह एक आम नाइट्रोजन उर्वरक है); ईरानी हमलों के बाद कतर ने अपने गैस संयंत्र बंद कर दिए - वह दुनिया के 14 फीसदी यूरिया की आपूर्ति करता है। भारत दुनिया में उर्वरक का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है। अब आपको पूरी तस्वीर साफ हो गई होगी। अगर ईरान युद्ध जारी रहता है व खाद बनाने वाले घटकों की सप्लाई में रुकावट आती है- दुनिया के अन्न उत्पादन का करीब आधा हिस्सा सिंथेटिक नाइट्रोजन खाद पर निर्भर है- तो गरीब और ज्यादा मुश्किल में पड़ जाएंगे।इस बीच, जैसे-जैसे यूरोप ट्रंप से तंग आ रहा है- फ्रांस, स्पेन और जर्मनी ने अमेरिकी राष्ट्रपति की दोहरी बातों पर सरेआम नाराज़गी व्यक्त की है; कि एक तरफ़ वे युद्ध रोकने की बात करते हैं वहीं दूसरी ओर चेतावनी कि अमेरिकी सेना इस पुरानी फ़ारसी सभ्यता को घुटनों पर लाने के लिए ईरान के नागरिक बुनियादी ढांचे, जैसे पुल, बिजली लाइनों आदि को निशाना बनाएगी- शक्ति संतुलन के बदलने के आरंभिक संकेत शायद अब मिलने लगे हैं।कुछ दिनों से होर्मुज़ जलडमरू मध्य पर जहाज़ों से टोल टैक्स युआन में वसूलना शुरू हो चुका है। गत शुक्रवार, भारत के लिए तेल ले जा रहा एक जहाज़ रास्ता बदलकर अब चीन की तरफ़ बढ़ रहा है। सामान्य कामकाज में बन जाने वाली असहजता अजीब बात नहीं- आखि़र युद्ध जारी है और भारत भी उससे अछूता नहीं- इस माह कई राज्यों में होने वाले चुनावों को लेकर गहमागहमी छायी है। शायद युद्ध की वजह से पैदा हुई बेचैनी पिछले महीने वॉशिंगटन डीसी स्थित एक थिंक टैंक, 'पीटरसन इंस्टीट्यूट फ़ॉर इंटरनेशनल इकोनॉमिक्स' की एक रिपोर्ट से और भी बढ़ गई। इस थिंक टैंक की अगुवाई अरविंद सुब्रमण्यन कर रहे हैं, जो मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में मुख्य आर्थिक सलाहकार रह चुके हैं। इस वर्किंग पेपर में 'भारत के जीडीपी आकलनों में पिछले 20 साल से हो रही गलतियों' के नए सबूत पेश किए गए हैं। अर्थशास्त्री के तर्क का मुख्य बिंदु है कि 2005 से 2011 के बीच के 'तेज़ी के सालों' में- भारत ने शायद कभी अपनी आर्थिक विकास दर 1-1.5 फीसदी अंक कम करके आंकी थी, जबकि 2012-2023 के बीच अपनी आर्थिक विकास दर को 1-1.5 प्रतिशत अंक ज़्यादा करके आंका है। रोचक यह कि जिस आधे दशक में दर कम करके आंकी गई, वह मनमोहन सिंह के कार्यकाल से मेल खाता है।

# दरोगा ने अपना दल नेता को थप्पड़ मारकर हवालात में डाला

❍ चालान पूछने गए नेता पर पुलिस की कथित मनमानी ❍ समर्थकों संग थाने पहुँच विधायक ने की कार्रवाई की मांग

स्वराज इंडिया ब्यूरो

**बिल्हौर(कानपुर)।** रविवार दोपहर बिल्हौर थाने में एक विवाद ने पुलिस और नेताओं के बीच माहौल गर्म कर दिया। अपना दल युवा मंच के जिलाध्यक्ष उज्जवल कटियार अपने समर्थकों के साथ कार चालान की जानकारी लेने थाने पहुँचे, लेकिन वहां उनके साथ दरोगा शिवम तोमर ने कथित रूप से मारपीट कर उन्हें हवालात में बंद कर दिया। एक मंत्री के फोन करने के बाद उज्जवल को छोड़ दिया गया।

पीड़ित अपना दल युवा मंच के जिला अध्यक्ष उज्ज्वल कटियार

पीड़ित जिलाध्यक्ष उज्जवल कटियार ने आरोप लगाया कि शनिवार को वह क्षेत्र भ्रमण कर रहे थे, तभी ककवन रोड क्रॉसिंग पर उनकी गाड़ी का चालान कर दिया गया।

थाने में पहुंचकर पुलिस से वार्ता करते विधायक राहुल बच्चा सोनकर और उनके समर्थक

अगले दिन रविवार को चालान की जानकारी लेने थाने पहुँचे तो दरोगा ने अभद्र भाषा का प्रयोग करते हुए थप्पड़ जड़ दिया और गाली गलौज की। इस घटना की सूचना मिलते ही अपना दल के कई नेता थाने पहुंच गए। भाजपा विधायक राहुल बच्चा सोनकर ने भी अपने समर्थकों के साथ थाने पहुँचकर घटना की जानकारी ली और पुलिस की कार्यशैली पर सख्त सवाल खड़े किए। विधायक और जिलाध्यक्ष ने दरोगा को सामने बुलाने की मांग की, जिसके बाद एसीपी मंजय सिंह, बिल्हौर कोतवाल सुधीर कुमार और इंस्पेक्टर जनार्दन यादव ने मामले को शांत कराने की कोशिश की। एसीपी मंजय सिंह ने बताया कि प्रार्थना पत्र प्राप्त हुआ है और जाँच जारी है। मामले की संवेदनशीलता को देखते हुए अधिकारियों ने थाने का फोर्स अलर्ट कर दिया और पीएसी बुला ली।

> थाने मे जो जूनियर दरोगा हैं उसकी मनमानी ज्यादा चलती है। अपना दल के पदाधिकारी उज्जवल कटियार की गाडी का चालान किया गया था। यह चालान की जानकारी लेने आए तो दरोगा शिवम तोमर ने थप्पड़ मारे और हवालत मे बंद कर दिया। थाने मे फरियादी अपनी शिकायत लेकर आता है। लेकिन पुलिस का इस तरह का व्यवहार ठीक नही है। उज्जवल के ऊपर कभी कोई प्रार्थना व कोई मुकदमा भी नहीं दर्ज है। शासन की मंशा के खिलाफ कार्य किया गया है। दरोगा पर कार्रवाई के लिए प्रार्थना पत्र दिया गया है।
>
> – राहुल बच्चा सोनकर, भाजपा विधायक, बिल्हौर विधानसभा

### थाने में धरना देने की चेतावनी

पीड़ित अपना दल युवा मंच के जिलाध्यक्ष उज्ज्वल ने बताया कि दरोगा पर कार्रवाई के लिए प्रार्थना पत्र दिया गया है। उच्च अधिकारियों द्वारा कोई ठोस कार्रवाई नहीं की जाती है तो पार्टी के लोगों को अवगत कराकर थाने में धरना दिया जाएगा।

## बारिश और ओलों ने मचाया कहर, फसलें बेहाल

स्वराज इंडिया ब्यूरो

**बिल्हौर(कानपुर)।** बिल्हौर तहसील और आसपास के क्षेत्रों में पिछले दो दिनों से मौसम ने करवट ली हुई है। रविवार शाम चौबेपुर ब्लॉक में अचानक तेज बारिश के साथ ओलावृष्टि हुई। करीब एक घंटे तक चली बारिश से खेतों में जलभराव हो गया और ओलों की मार से तैयार गेहूं की फसल जमीन पर गिर गई।ककवन ब्लॉक में भी तेज बारिश दर्ज की गई, लेकिन वहां ओलावृष्टि नहीं हुई। लगातार हो रही बारिश के कारण खेतों में पानी भरने से फसलों के खराब होने की आशंका बढ़ गई है। बिल्हौर और शिवराजपुर में भी दिनभर बारिश और बूंदाबांदी का दौर जारी रहा, जिससे जनजीवन प्रभावित रहा।

मौसम विभाग ने चेतावनी जारी की है और क्षेत्र में अभी भी घने बादल छाए हुए हैं। किसानों की चिंता बढ़ गई है क्योंकि ओलावृष्टि से गेहूं की फसल को भारी नुकसान होने की संभावना है। वहीं हाल ही में बोई गई मक्का, उड़द और मूंग की फसल भी प्रभावित हुई है। छोटे पौधों के टूटने से आगामी उत्पादन पर असर पड़ने की संभावना जताई जा रही है।

➪ जगह जगह तार टूटने से कई गावों की बिजली गुल

### 100 गांवों की बिजली गुल

पिछले दो दिनों से आंधी तूफान के बीच बिल्हौर तहसील के चौबेपुर विद्युत उपखंड से जुड़े करीब 100 गांवों की बिजली गुल हो गई। सूचना मिलते ही बिजली विभाग की टीम सक्रिय हुई और मरम्मत कार्य में जुट गईं। उधर बिजली गुल होने से जहां रोजमर्रा का कार्य प्रभावित हुआ वहीं पानी का भी संकट गहरा गया। उधर शिवराजपुर के करीब एक दर्जन गांवों में भी आंधी तूफान में फाल्ट होने से करीब 15 से 18 घंटे बिजली गायब रही।

## किसान पर जानलेवा हमला, तीन भाई गिरफ्तार

स्वराज इंडिया ब्यूरो

**बिल्हौर (कानपुर)।** कमसान गांव में खेत जा रहे किसान आनंद कुमार शर्मा पर हुए जानलेवा हमले के आरोप में पुलिस ने तीनों आरोपितों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। आरोपित सगे भाई हैं और घटना के बाद फरार चल रहे थे।

सुमन शर्मा पत्नी आनंद कुमार ने 18 मार्च को थाना में तहरीर देते हुए बताया कि 13 मार्च की शाम उनके पति खेत में काम कर रहे थे। तभी योगेश, अंजेश और सोनू पुत्र लालू ने उन पर अचानक हमला कर दिया। आरोपितों ने लाठी-डंडा और रॉड से मारपीट की, इसी दौरान योगेश ने चाकू से सिर पर वार कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। घटना के दौरान ग्रामीण मौके पर पहुंचे तो आरोपितों ने तमंचा दिखाकर धमकी दी और फरार हो गए। घायल आनंद को एंबुलेंस से सीएचसी ले जाया गया और गंभीर हालत में उन्हें कानपुर रेफर किया गया। पुलिस ने तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर आरोपियों की तलाश शुरू की। रविवार को मुखबिर की सूचना पर नानामऊ अंडरपास के पास उपनिरीक्षक देव सिंह, सोनपाल सिंह और अतुल कुमार त्रिपाठी के नेतृत्व में पुलिस टीम ने तीनों आरोपियों को गिरफ्तार किया और न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया।

## शिवराजपुर में रेलवे ट्रैक किनारे मिला अज्ञात युवक का शव, जांच में जुटी पुलिस

स्वराज इंडिया ब्यूरो

**शिवराजपुर/बिल्हौर(कानपुर)।** शिवराजपुर थाना क्षेत्र में रविवार सुबह एक अज्ञात युवक का शव मिलने से इलाके में सनसनी फैल गई। दुबियाना रेलवे क्रॉसिंग के पास ट्रैक किनारे पड़े शव को सबसे पहले सुबह टहलने निकले ग्रामीणों ने देखा और तुरंत पुलिस को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है।

मृतक की उम्र करीब 30 से 35 वर्ष के बीच आंकी जा रही है। युवक ने गुलाबी रंग की शर्ट और जींस पहन रखी थी, जबकि उसकी कमर में धागा बंधा हुआ मिला। उसके पास से कोई पहचान पत्र या मोबाइल फोन बरामद नहीं हुआ, जिससे उसकी पहचान नहीं हो सकी है।

जानकारी के मुताबिक शव बर्राजपुर रेलवे स्टेशन से लगभग एक किलोमीटर पूर्व दिशा में ट्रैक के किनारे पड़ा मिला। स्थानीय लोगों का मानना है कि युवक की मौत संभवतः चलती ट्रेन से गिरने के कारण हुई हो सकती है, हालांकि पुलिस हर पहलू को ध्यान में रखते हुए जांच कर रही है।थाना प्रभारी ने बताया कि शव को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया गया है और शिनाख्त के प्रयास किए जा रहे हैं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों का खुलासा हो सकेगा।

## शिक्षा का संदेश घर-घर पहुंचा

# स्कूल चलो अभियानः प्राथमिक विद्यालय बेड़ामऊ में निकाली गई जागरूकता रैली

### शिक्षकों व नन्हे छात्रों ने बढ़-चढ़कर लिया हिस्सा, अभिभावकों से बच्चों का नामांकन कराने की अपील

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। विकास खंड मलासा अंतर्गत प्राथमिक विद्यालय बेड़ामऊ में 'स्कूल चलो अभियान' के तहत एक भव्य जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। रैली में विद्यालय के शिक्षक-शिक्षिकाओं के साथ-साथ छात्र-छात्राओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और पूरे गांव में घूमकर शिक्षा के महत्व का संदेश घर-घर तक पहुंचाया।

रैली के दौरान बच्चों ने हाथों में स्लोगन लिखी तख्तियां लेकर सब पढ़ें, सब बढ़ें, ÷हर बच्चा स्कूल जाए जैसे नारों के साथ लोगों को जागरूक किया। गांव के विभिन्न मोहल्लों में पहुंचकर शिक्षकों ने अभिभावकों से संवाद किया और उन्हें बच्चों की शिक्षा के प्रति जिम्मेदारी समझाई। प्रधानाध्यापक रज्जन लाल कुशवाहा, सहायक अध्यापक बृजेश कुमार, शिक्षामित्र छवि कटियार एवं शिक्षामित्र दिलीप कुमार और ग्राम प्रधान सहित रैली का नेतृत्व किया। उन्होंने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों का नामांकन कराकर उन्हें नियमित विद्यालय भेजें, जिससे उनका भविष्य उज्ज्वल बन सके।शिक्षकों ने बताया कि 'स्कूल चलो अभियान' का मुख्य उद्देश्य प्रत्येक बच्चे को शिक्षा से जोड़ना और ड्रॉपआउट बच्चों को पुनः विद्यालय तक लाना है। सरकार द्वारा संचालित निःशुल्क पाठ्यपुस्तक, यूनिफॉर्म और मध्याह्न भोजन जैसी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए भी लोगों को जागरूक किया गया। रैली के समापन पर विद्यालय परिसर में सभी बच्चों को नियमित विद्यालय आने की शपथ दिलाई गई। इस अवसर पर विद्यालय का समस्त स्टाफ मौजूद रहा और सभी ने मिलकर यह संकल्प लिया कि कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

# मिडिल कक्षा के बच्चों का हुआ सम्मान, रंगारंग कार्यक्रम से सजा वार्षिक उत्सव

### » खण्ड शिक्षा अधिकारी ने किया उत्साहवर्धन, देशभक्ति गीतों से गूंजा विद्यालय परिसर

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

रसूलाबाद, कानपुर देहात। क्षेत्र के कंपोजिट विद्यालय देहली में वार्षिक उत्सव बड़े ही उत्साह और धूमधाम के साथ आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में खण्ड शिक्षा अधिकारी अजब सिंह उपस्थित रहे, जिन्होंने बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने और उज्ज्वल भविष्य बनाने के लिए प्रेरित किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों की श्रृंखला में छात्र-छात्राओं ने 'अनेकता में एकता' विषय पर आकर्षक नाटक प्रस्तुत किया।

नाटक के माध्यम से भारत की विविधता और एकता का संदेश दिया गया, जिसे उपस्थित लोगों ने खूब सराहा। इसके अलावा बच्चों ने देशभक्ति गीतों पर शानदार प्रस्तुतियां दीं, जिससे पूरा विद्यालय परिसर राष्ट्रभक्ति के रंग में रंग गया और तालियों की गूंज से माहौल जीवंत हो उठा।इस अवसर पर सहायक अध्यापक नीलम चंदेल द्वारा कक्षा 8 के विद्यार्थियों को कैप एवं हैंड वॉच भेंट कर सम्मानित किया गया तथा उन्हें भावभीनी विदाई दी गई। विद्यालय परिवार ने सभी विद्यार्थियों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में लीलावती, रमारमन, शिक्षामित्र ज्योति कुमारी, सविता देवी, राकेश कौशल, पारुल एवं अनुपमा मिश्रा सहित शिक्षकगण, अभिभावक व क्षेत्रीय गणमान्य लोग उपस्थित रहे, जिन्होंने बच्चों के प्रदर्शन की सराहना करते हुए उनके उत्साह को बढ़ाया।

# आसमान से बरसी आफत ओलों की मार से उजड़ी फसलें

## खेतों में बिखरी उम्मीदें

» कानपुर देहात का किसान 80प्रतिशत नुकसान से जूझता बेबस, मुआवजे की आस में टिकी निगाहें

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

फसल का आंकलन करते लेखपाल

**कानपुर देहात। बेमौसम बारिश, तेज आंधी और ओलावृष्टि ने जनपद के किसानों की महीनों की मेहनत को कुछ ही मिनटों में तबाही में बदल दिया। जहां कुछ दिन पहले तक खेतों में लहलहाती सुनहरी गेहूं की फसल किसानों के चेहरों पर मुस्कान बिखेर रही थी, वहीं अब वही खेत गिरी, टूटी और सड़ती फसल की दर्दनाक तस्वीर पेश कर रहे हैं। अचानक बदले मौसम के इस कहर ने किसानों की उम्मीदों को जड़ से हिला दिया है।**

किसानों के अनुसार जिले में करीब 80 प्रतिशत गेहूं की फसल बुरी तरह प्रभावित हुई है, जबकि सरवनखेड़ा क्षेत्र सबसे ज्यादा तबाही का केंद्र बना है। यहां तेज हवाओं और ओलों की मार से खड़ी फसल जमीन पर बिछ गई। गेहूं की बालियां टूटकर अलग हो गईं, दाने झड़कर खेतों में बिखर गए और कई जगहों पर काले पड़ गए, जिससे न सिर्फ उत्पादन बल्कि गुणवत्ता और बाजार मूल्य पर भी गंभीर असर पड़ा है।

गजनेर, मंगटा, कटेठी, कौसम, कोरारी, नहोली, रौगांव, जुनिया, पतरा, भदेशा, शाहजहांपुर निनाया, मनेथू, सैथा, सेरूआ, लोहारी, गोगूमऊ, जिठरौली, मोहाना, हिम्मापुरवा और तिलौची सहित दर्जनों गांवों में यही मंजर देखने को मिल रहा है। हर खेत मानो किसानों की टूटी उम्मीदों की कहानी बयां कर रहा है।सरवनखेड़ा विकास खंड के भरतपुर पियासी, सरदारपुर, आलापुर, नंदपुर और रूपपुर जैसे गांवों में शनिवार शाम महज दस मिनट की ओलावृष्टि ने भारी तबाही मचाई। पकी खड़ी गेहूं की फसल पूरी तरह जमीन पर गिर गई, जबकि अरहर की फलियां भी टूटकर बिखर गईं। किसानों के लिए यह किसी आपदा से कम नहीं है।

आलापुर गांव के शैलेंद्र बताते हैं कि उनकी आठ बीघा गेहूं की पूरी फसल बर्बाद हो गई। पियासी के रामेंद्र सिंह की 15 बीघा फसल कटाई के लिए तैयार थी, लेकिन ओलों ने सबकुछ खत्म कर दिया। सरदारपुर के भूप सिंह का दर्द छलक पड़ता ÷भगवान ने परोसी हुई थाली छीन ली।÷ ग्राम प्रधान लाल बहादुर के अनुसार कई घरों में इस तबाही के बाद चूल्हा तक नहीं जला।

इस आपदा के बीच अकबरपुर लोकसभा क्षेत्र के सांसद भोले सिंह ने किसानों की स्थिति को गंभीरता से लेते हुए जिला प्रशासन को पत्र भेजकर तत्काल सर्वे और मुआवजे की मांग की है। उन्होंने निर्देश दिया है कि फसलों के साथ-साथ मकानों को हुए नुकसान का भी आकलन किया जाए और प्रभावित परिवारों को शीघ्र राहत दी जाए।फसल की इस भारी क्षति ने किसानों के सामने नया संकट खड़ा कर दिया है। पहले ही बीज, खाद, डीजल और सिंचाई पर भारी खर्च हो चुका था, अब उत्पादन घटने से लागत निकालना भी मुश्किल हो गया है। कई किसानों ने कर्ज लेकर खेती की थी, लेकिन मौजूदा हालात में कर्ज चुकाना उनके लिए असंभव सा लग रहा है। पीड़ित किसानों की मांग है कि प्रशासन जल्द से जल्द सर्वे पूरा कर वास्तविक नुकसान के अनुसार मुआवजा दे। फिलहाल, टूटे मन और उजड़े खेतों के बीच किसान सिर्फ सरकार और प्रशासन से राहत की उम्मीद लगाए बैठा है शायद यही सहारा उसे इस संकट से उबार सके।

## समस्याओ से परचित कराते किसान

ओलावृष्टि से गांव के अधिकांश किसानों की फसल बर्बाद हो गई है, हालात बेहद चिंताजनक हैं। कई परिवारों के सामने रोजी-रोटी का संकट खड़ा हो गया है, इसलिए प्रशासन को जल्द सर्वे कराकर उचित मुआवजा देना चाहिए।

मंगल सिंह परिहार,प्रधान सेरूआ

फसल पूरी तरह तैयार थी, बस कटाई ही बाकी थी, लेकिन ओलों ने सब कुछ चौपट कर दिया। अब हालात ऐसे हैं कि खेत में कुछ बचा ही नहीं और कर्ज कैसे चुकाएं, यही सबसे बड़ी चिंता है।

राघवेंद्र सिंह किसान

ओलावृष्टि ने हमारी पूरी मेहनत बर्बाद कर दी। गेहूं की फसल जमीन पर गिरकर खराब हो गई, अब लागत निकालना भी मुश्किल है। कर्ज चुकाने की चिंता सता रही है, सरकार से जल्द मुआवजे की उम्मीद है।

जीतबहादुर सिंह किसान मंगटा

# तीन दिन की मार: आसमान के कहर ने छीन ली किसानों की मुस्कान

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

**कानपुर देहात । कभी आसमान उम्मीदों का साथी बनता है, तो कभी वही सबसे बड़ा दुश्मन साबित हो जाता है। कानपुर देहात में बीते तीन दिनों से बिगड़े मौसम ने किसानों के चेहरे से मुस्कान छीन ली है। बेमौसम बारिश और ओलावृष्टि ने खेतों में खड़ी सुनहरी फसल को देखते ही देखते तबाही के कगार पर ला खड़ा किया है।**

## बारिश-ओलों की दोहरी चोट से गेहूं की फसल तबाह

बारिश के चलते गेहूँ के गट्ठर के आसपास पानी

शुक्रवार रात से शुरू हुआ मौसम का यह बिगड़ा मिजाज रविवार तक थमने का नाम नहीं ले रहा। शनिवार को हुई बारिश ने जहां खेतों को पूरी तरह भिगो दिया, वहीं रविवार दोपहर अचानक तेज बारिश के साथ ओलों की बौछार ने हालात और भी खराब कर दिए।

आसमान में छाए काले बादल, बिजली की कड़क और तेज हवाओं ने किसानों के दिलों में डर बैठा दिया। खेतों में काम कर रहे किसान अपनी अधूरी मेहनत छोड़कर जान बचाने के लिए इधर-उधर भागते नजर आए।रविवार सुबह किसान इस उम्मीद के साथ खेतों में पहुंचे थे कि कटाई का काम शुरू करेंगे, लेकिन गीली फसल और खराब मौसम ने उनकी उम्मीदों पर पानी फेर दिया। दोपहर बाद हुई ओलावृष्टि ने तो जैसे बची-खुची उम्मीद भी तोड़ दी।

अजनपुर, इंदौती, असालतगंज, बारापुर, बरिगांव, पहाड़ीपुर, कहिंजरी और नौहानौगांव समेत कई गांवों में मटर के दाने जितने ओले गिरने की खबर है।

किसानों के अनुसार, ओलों की मार से गेहूं की बालियां झुक गई हैं और दाने टूटकर खेतों में बिखरने लगे हैं। जिस फसल को किसान घर लाने की तैयारी में थे, अब वही खेतों में बर्बादी की कहानी बयां कर रही है।

किसान बृजकिशोर बताते हैं कि अब कम से कम एक सप्ताह तक कटाई और मड़ाई पूरी तरह ठप रहेगी। गीली फसल को संभालना भी मुश्किल हो गया है। उनका कहना है कि अगर मौसम जल्द साफ नहीं हुआ, तो नुकसान कई गुना बढ़ सकता है।

कई किसानों का मानना है कि इस बार लागत निकालना भी मुश्किल हो जाएगा।कर्ज लेकर फसल तैयार करने वाले किसानों के सामने अब आर्थिक संकट खड़ा हो गया है। परिवार की रोजी-रोटी पर खतरा मंडरा रहा है। ऐसे में किसानों ने सरकार और प्रशासन से तत्काल सर्वे कराकर उचित मुआवजा देने की मांग तेज कर दी है।

उनका कहना है कि समय पर मदद नहीं मिली तो हालात और गंभीर हो सकते हैं। स्थानीय लोगों का भी मानना है कि बेमौसम मौसम अब हर साल नई चुनौती बनकर सामने आ रहा है। किसानों ने फसल बीमा योजना को और प्रभावी बनाने और तुरंत राहत देने की मांग उठाई है।

## खेतों में पसरा पड़ा सन्नाटा, मुआवजे की मांग हुई तेज

मुख्य सड़कों में भरा पानी

### ओलावृष्टि के बाद क्यों बढ़ता है नुकसान?

ओलावृष्टि और बारिश के बाद पकी हुई गेहूं की फसल के दाने नमी सोखकर फूल जाते हैं। बाद में जब धूप निकलती है और फसल सूखती है, तो यही दाने बालियों से अलग होकर जमीन पर गिरने लगते हैं। इससे उत्पादन में भारी गिरावट आती है और किसानों को सीधा आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। इस बार की मार ने किसानों की मेहनत और उम्मीद दोनों को गहरा झटका दिया है।

# इश्क का खूनी खेल: शादी से पहले मंगेतर की हत्या, प्रेमिका ही निकली साजिशकर्ता

**2 अप्रैल की रात मकरंदपुर-बंथा मार्ग पर एक युवक का खून से लथपथ शव गेहूं के खेत में मिला था**

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

**कानपुर देहात। थाना शिवली क्षेत्र में सामने आया राजाबाबू हत्याकांड अब एक साधारण हत्या नहीं, बल्कि रिश्तों, विश्वास और प्रेम के नाम पर रची गई एक खौफनाक साजिश की कहानी बन गया है। जिस युवती के साथ सात जन्मों का साथ तय था, उसी ने अपने प्रेमी के साथ मिलकर अपने होने वाले पति की हत्या करा दी।**

2 अप्रैल की रात मकरंदपुर-बंथा मार्ग पर एक युवक का खून से लथपथ शव गेहूं के खेत में मिला, जिससे पूरे इलाके में सनसनी फैल गई। मृतक की पहचान राजाबाबू पुत्र रामलखन वर्मा के रूप में हुई। परिजनों की तहरीर पर थाना शिवली में हत्या का मुकदमा दर्ज कर पुलिस ने जांच शुरू की। जैसे-जैसे जांच आगे बढ़ी, मामला और भी चौंकाने वाला होता गया। पता चला कि राजाबाबू का पिछले दो वर्षों से कोमल नाम की युवती के साथ प्रेम संबंध था और दोनों की शादी 7 मई को तय थी। परिवारों में खुशी का माहौल था, लेकिन इसी बीच इस रिश्ते में तीसरे शख्स सागर राजपूत की एंट्री ने सब कुछ बदल दिया।

जांच में सामने आया कि कोमल का सागर से भी प्रेम संबंध था। शादी तय होने के बाद सागर ने कोमल को दोबारा अपने साथ रहने के लिए राजी कर लिया। इसके बाद दोनों ने मिलकर राजाबाबू को रास्ते से हटाने की साजिश रची। घटना वाले दिन कोमल ने बेहद चालाकी से पूरी योजना को अंजाम दिया। वह लगातार राजाबाबू से फोन पर बात करती रही, उसे मिलने के लिए बुलाती रही और उसकी लोकेशन सागर को देती रही। जैसे ही राजाबाबू तय स्थान पर पहुंचा, पहले से घात लगाए बैठे सागर, उसके साथी ललित नागर और एक नाबालिग ने उस पर हमला कर दिया।

हमलावरों ने राजाबाबू पर ताबड़तोड़ चाकुओं से वार किए। वार इतने बेरहमी से किए गए कि उसकी मौके पर ही मौत हो गई। इसके बाद आरोपियों ने शव को गेहूं के खेत में फेंक दिया और फरार हो गए। पुलिस ने इस मामले को चुनौती के रूप में लेते हुए तेजी से कार्रवाई की। तकनीकी साक्ष्य, कॉल डिटेल और गहन पूछताछ के आधार पर 48 घंटे के भीतर पूरी साजिश का खुलासा कर दिया गया।

4 अप्रैल को पुलिस ने मुख्य आरोपी सागर राजपूत को गिरफ्तार किया और एक नाबालिग को संरक्षण में लिया। इसके बाद 5 अप्रैल को कोमल को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया गया। पूछताछ में दोनों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया। आरोपियों की निशानदेही पर पुलिस ने हत्या में प्रयुक्त चाकू, मृतक का मोबाइल फोन, घटना में इस्तेमाल की गई मोटरसाइकिल, आरोपियों के मोबाइल फोन तथा वारदात के समय पहने गए कपड़े बरामद किए हैं। फिलहाल इस सनसनीखेज हत्याकांड का एक आरोपी ललित नागर अभी भी फरार है। उसकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस की टीमें लगातार दबिश दे रही हैं।

# सोशल मीडिया पर दोस्ती, शादी का झांसा देकर युवती से दुष्कर्म

**» नलकूप पर बुलाकर वारदात, विरोध करने पर दी धमकी**

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। मूसानगर थाना क्षेत्र में एक युवती के साथ शादी का झांसा देकर दुष्कर्म करने का मामला सामने आया है। पीड़िता ने आरोप लगाया है कि आरोपी युवक ने सोशल मीडिया के माध्यम से दोस्ती कर उसे प्रेमजाल में फंसा लिया।पीड़िता के अनुसार, घाटमपुर के परास गांव निवासी नितेश सचान उर्फ सतीश ने शादी का भरोसा देकर उसे 17 मार्च को गांव के पास स्थित नलकूप पर बुलाया। वहां आरोपी ने जबरन दुष्कर्म किया और विरोध करने पर गंभीर परिणाम भुगतने की धमकी दी। पीड़िता ने यह भी आरोप लगाया कि आरोपी ने जातिसूचक शब्दों का इस्तेमाल कर उसका अपमान किया। घटना के बाद वह मानसिक रूप से काफी आहत है और न्याय की मांग कर रही है। थाना मूसानगर पुलिस ने पीड़िता की तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज कर लिया है। एसएचओ रीना गौतम ने बताया कि मामले की जांच शुरू कर दी गई है और आरोपी की गिरफ्तारी के प्रयास किए जा रहे हैं। जल्द ही आरोपी को गिरफ्तार कर सख्त कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

# मलासा में कल विशाल रामलीला आयोजन, 'धनुष भंग' लीला बनेगी मुख्य आकर्षण

**आयोजन की तैयारियां अंतिम चरण में, सभी व्यवस्थाओं को पूरा किया जा रहा**

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। विकास खंड मलासा के ग्राम मलासा में एक बार फिर भक्ति, आस्था और सांस्कृतिक परंपरा का भव्य संगम देखने को मिलेगा। आदर्श नवयुवक मंगलदल कमेटी के तत्वावधान में मंगलवार, 7 अप्रैल को विशाल रामलीला कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। इस वर्ष रामलीला में भगवान श्रीराम के जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण और लोकप्रिय प्रसंग 'धनुष भंग' मंचित किया जाएगा, जिसे लेकर पूरे क्षेत्र में खासा उत्साह व्याप्त है।

कार्यक्रम का आयोजन गांव स्थित बीएसएनएल टावर के पास किया जाएगा। आयोजन स्थल पर व्यापक स्तर पर तैयारियां की जा रही हैं। आसपास के दर्जनों गांवों से बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं के पहुंचने की संभावना है, जिससे पूरे क्षेत्र में मेले जैसा वातावरण बनने के आसार हैं। आयोजकों के अनुसार इस बार मंच सज्जा, प्रकाश व्यवस्था और ध्वनि प्रणाली को पहले से अधिक आधुनिक और आकर्षक बनाया जा रहा है, ताकि दर्शकों को एक भव्य, जीवंत और यादगार प्रस्तुति का अनुभव मिल सके। आयोजन समिति से जुड़े नरेश सिंह, सिंह चंद्र मोहन सिंह रामगणेश, ऋषभ सिंह, पुनीत सिंह, अजय सिंह, लल्लू आदि ने बताया कि मंगलवार को होने वाले इस आयोजन की तैयारियां अंतिम चरण में हैं और सभी व्यवस्थाओं को सुव्यवस्थित ढंग से पूरा किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि हर वर्ष की तरह इस बार भी स्थानीय कलाकार अपनी प्रभावशाली प्रस्तुति से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देंगे।

गौरतलब है कि मलासा की रामलीला अब क्षेत्र की एक विशेष पहचान बन चुकी है। हर वर्ष बढ़ती भीड़ और आयोजन की भव्यता इसकी लोकप्रियता को दर्शाती है। यह आयोजन न केवल धार्मिक आस्था का केंद्र है, बल्कि सामाजिक एकता, भाईचारे और सांस्कृतिक विरासत को सहेजने का भी सशक्त माध्यम बनता जा रहा है।

# चेकिंग के दौरान पुलिस-मुठभेड़ 25 हजार का इनामी बदमाश घायल

**» एक बदमाश के पैर में गोली, दूसरा अंधेरे में फरार लूटकांड का खुलासा**

» स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

कानपुर देहात। पुलिस की सघन चेकिंग अभियान के दौरान रविवार देर रात भोगनीपुर कोतवाली क्षेत्र में बदमाशों से मुठभेड़ हो गई। इस दौरान 25 हजार रुपये के इनामी लुटेरे के पैर में गोली लग गई, जबकि उसका साथी अंधेरे का फायदा उठाकर मौके से फरार हो गया। पुलिस ने घायल बदमाश को गिरफ्तार कर उपचार के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पुखरायां में भर्ती कराया, जहां प्राथमिक इलाज के बाद उसे जेल भेज दिया गया है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस के उच्चाधिकारी मौके पर पहुंच गए और आसपास के क्षेत्रों में घेराबंदी कर फरार आरोपी की तलाश शुरू कर दी गई। पुलिस की फील्ड यूनिट ने भी मौके पर पहुंचकर साक्ष्य एकत्र किए।

एएसपी/सीओ भोगनीपुर संजय वर्मा के अनुसार, 13 मार्च को जुनैदपुर गांव के पास बाइक सवार दंपति से अपाचे मोटरसाइकिल पर आए दो बदमाशों ने महिला के कान के बाले और चेन झपट ली थी। इस मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर बदमाशों की तलाश शुरू कर दी थी। आरोपियों की गिरफ्तारी पर 25 हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया गया था। रविवार रात को भोगनीपुर कोतवाल सतीश कुमार सिंह और चौकी इंचार्ज देवीपुर अतेंद्र कुमार सिंह पुलिस बल के साथ जुनैदपुर गांव के पास वाहन चेकिंग कर रहे थे। इसी दौरान एक अपाचे बाइक पर सवार दो युवक आते दिखे। पुलिस को देखकर दोनों भागने लगे। शक होने पर पुलिस ने उनका पीछा किया तो बदमाशों ने खुद को घिरता देख पुलिस पर जान से मारने की नीयत से फायरिंग कर दी। पुलिस ने आत्मरक्षा में जवाबी कार्रवाई की, जिसमें एक बदमाश के पैर में गोली लग गई और वह बाइक सहित गिर पड़ा। उसका साथी अंधेरे का लाभ उठाकर मौके से फरार हो गया।

पकड़े गए घायल बदमाश ने पूछताछ में अपना नाम सुल्तान पुत्र पीर मोहम्मद निवासी गंगाघाट, उन्नाव बताया। उसने अपने फरार साथी की पहचान रिजवान अत्ता उर्फ पहलवान निवासी कलक्टरगंज, कानपुर नगर के रूप में की। सुल्तान ने कबूल किया कि दोनों ने 13 मार्च को महिला से चेन और बाले लूटे थे और रविवार को भी इसी तरह की वारदात की फिराक में घूम रहे थे। पुलिस ने सुल्तान के पास से 315 बोर का तमंचा, दो जिंदा कारतूस, दो खोखा, अपाचे मोटरसाइकिल, 12,400 रुपये नकद, पीली धातु का टूटा झाला और चेन बरामद की है। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उसे जेल भेज दिया है, जबकि फरार बदमाश की गिरफ्तारी के लिए टीमें गठित कर दबिश दी जा रही है।

## अस्तित्व बचाने को पुकारती सरयू

# जीवनदायिनी नदी आज खुद कर रही 'त्राहिमाम'

- किभी आस्था और जीवन का आधार रही सरयू अब सिकुड़कर नाले में तब्दील
- भू-माफियाओं के कब्जे और प्रशासनिक अनदेखी से हालात गंभीर

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

**लखीमपुर खीरी। मैं सरयू हूं वही सरयू, जिसने तुम्हें जीवन दिया, तुम्हारी प्यास बुझाई, तुम्हारी फसलों को सींचा, तुम्हारे आंचल की गंदगी को भी अपने भीतर समेट लिया, लेकिन आज मैं खुद तड़प रही हूं। यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि उस दर्द की सच्ची तस्वीर है जो निघासन क्षेत्र से गुजरने वाली सरयू नदी आज झेल रही है। कभी कल-कल बहने वाली, लोगों की आस्था और जीवन का केंद्र रही यह नदी आज अपने अस्तित्व के संकट से जूझ रही है। नदी जैसे खुद अपनी वेदना बयां कर रही हो फ़जब तक तुम्हारा पेट भरता रहा, मैं तुम्हारे लिए जरूरी रही, लेकिन आज जब मैं सूख रही हूं, सिकुड़ रही हूं, तो तुम मुझे भूल गए।**

- सरयू नदी का तेजी से सिकुड़ना पर्यावरणीय संकट का संकेत
- भू-माफियाओं द्वारा अतिक्रमण मुख्य वजहों में शामिल
- प्रशासनिक स्तर पर ठोस कार्रवाई का अभाव
- जलस्तर गिरने से खेती और भूजल पर खतरा
- स्थानीय लोगों की उदासीनता भी स्थिति को बिगाड़ रही
- समय रहते संरक्षण नहीं हुआ तो नदी के पूरी तरह खत्म होने का खतरा

निघासन क्षेत्र में सरयू नदी का स्वरूप तेजी से बदलता जा रहा है। जहां कभी साफ और निर्मल जल बहता था, वहां आज गाद, कचरा और अतिक्रमण का अंधेरा छा गया है। भू-माफियाओं ने कथित राजनीतिक संरक्षण के दम पर नदी के किनारों को काट-काटकर कब्जा कर लिया है।

नतीजा यह हुआ कि चौड़ी धारा अब सिमटकर एक संकरे नाले में तब्दील होती जा रही है।

स्थानीय लोगों के मुताबिक, सरयू कभी यहां के जीवन का अभिन्न हिस्सा थी। बच्चे इसके स्वच्छ जल में स्नान करते थे, लोग इसकी धारा को पवित्र मानकर पूजा करते थे। यहां तक कि कई लोग मानते थे कि इसके जल में स्नान करने से चर्म रोग तक ठीक हो जाते थे।

लेकिन आज वही सरयू अपनी पहचान खोती नजर आ रही है। नदी का जलस्तर गिर चुका है, बहाव रुक-रुक कर चल रहा है और जगह-जगह अवैध कब्जों ने इसकी सांसें घोंट दी हैं। सरयू जैसे गुहार लगा रही हो कोई तो मेरी पुकार सुने न कोई समाजसेवी आगे आ रहा है, न प्रशासन जाग रहा है, न ही जनप्रतिनिधि मेरी ओर देख रहे हैं। क्या मैं यूं ही खत्म हो जाऊंगी?

विडंबना यह भी है कि जिन लोगों ने कभी इस नदी से जीवन पाया, आज वही लोग चुप्पी साधे हुए हैं। गांव के कई लोग आज नेता, अधिकारी और प्रभावशाली व्यक्ति बन चुके हैं, लेकिन अपनी इस जीवनदायिनी नदी को बचाने के लिए कोई ठोस पहल नहीं कर रहे। पर्यावरण विशेषज्ञों का मानना है कि अगर जल्द ही सरयू के संरक्षण के लिए ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो आने वाले समय में यह नदी पूरी तरह से खत्म हो सकती है। इससे न सिर्फ पर्यावरणीय संतुलन बिगड़ेगा, बल्कि क्षेत्र की जल व्यवस्था और खेती पर भी गहरा असर पड़ेगा।

सरयू आज सिर्फ एक नदी नहीं, बल्कि एक चेतावनी बन चुकी है प्रकृति के साथ लापरवाही का अंजाम क्या हो सकता है।

नदी की यह पुकार अब पूरे समाज के लिए एक सवाल है क्या हम अपनी इस जीवनदायिनी धरोहर को बचा पाएंगे, या फिर इतिहास के पन्नों में एक और नदी के विलुप्त होने की कहानी जोड़ देंगे? सरयू आज भी इंतजार में है,

किसी ऐसे हाथ का, जो उसे फिर से संवार दे,किसी ऐसी पहल का, जो उसकी धारा को फिर जीवंत कर दे, ताकि वह एक बार फिर कल-कल बह सके और कह सके मैं फिर लौट आई हूं आपकी अपनी सरयू।

# 25 हजार का इनामिया बदमाश पुलिस मुठभेड़ में गिरफ्तार

»स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

लखीमपुर खीरी। जनपद में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत फरधान थाना पुलिस और स्वाट टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए 25 हजार रुपये के इनामी बदमाश को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। पुलिस मुठभेड़ के दौरान बदमाश के पैर में गोली लगी।

पुलिस के अनुसार गिरफ्तार आरोपी की पहचान सिंगाही थाना क्षेत्र के सिंगहा खुर्द गांव निवासी मासूम अली के रूप में हुई है। बताया जा रहा है कि मासूम अली काफी समय से फरार चल रहा था, उस पर 25 हजार रुपये का इनाम घोषित था। पुलिस को उसकी लोकेशन मिलने पर फरधान थाना पुलिस और स्वाट टीम ने संयुक्त रूप से घेराबंदी की, इस दौरान आरोपी ने भागने की कोशिश की, जिसके बाद मुठभेड़ हो गई।

मुठभेड़ के दौरान पुलिस की जवाबी कार्रवाई में आरोपी के पैर में गोली लग गई, जिससे वह घायल हो गया। पुलिस ने मौके पर ही उसे गिरफ्तार कर लिया और उपचार के लिए अस्पताल भेज दिया। पुलिस का कहना है कि आरोपी से पूछताछ की जा रही है तथा उसके आपराधिक इतिहास को खंगाला जा रहा है। अन्य मामलों में भी उसकी संलिप्तता की जांच की जा रही है।

# सतहरिया का शौचालय बना 'बीमारी घर', गंदगी से बेहाल हो रहे यात्री

## सफाई व्यवस्था कागजों तक सीमित, बिना कर्मचारी के चल रहा संचालन

»स्वराज इंडिया ब्यूरो

जौनपुर। मुंगराबादशाहपुर-प्रयागराज मार्ग पर स्थित सतहरिया औद्योगिक क्षेत्र में बना सार्वजनिक शौचालय अब सुविधा के बजाय परेशानी और बीमारी का कारण बन गया है। तीर्थ यात्रियों के लिए बनाए गए इस शौचालय की हालत इतनी खराब है कि अंदर जाते ही लोगों को उल्टी-दस्त जैसी समस्या महसूस होने लगती है। हालत यह है कि आम लोगों की बात तो दूर, बीआईपी लोग भी इसके पास जाने से कतराते हैं।

बताया जाता है कि महाकुंभ मेले के दौरान सतहरिया औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा इस शौचालय और स्नानघर का निर्माण कराया गया था, जिसका उद्घाटन भी बड़े उत्साह के साथ हुआ था। लेकिन अब यह शौचालय गंदगी का अड्डा बन चुका है। सूत्रों के अनुसार, निर्माण के बाद से यहां नियमित सफाई नहीं हुई है, जिससे दुर्गंध और गंदगी का अंबार लगा हुआ है।

स्थिति को और बदतर बना रही है पुलिस चौकी परिसर में खड़ी दुर्घटनाग्रस्त वाहनें, जो गंदगी फैलाने का काम कर रही हैं।

वहीं शौचालय में लगे टोटी आदि भी गायब हैं। सीडा सिविल प्रबंधक मोहम्मद शारिक हबीब का कहना है कि कई बार टोटी लगवाई गई, लेकिन चोरी हो जाती है। उन्होंने बताया कि फिलहाल वहां कोई स्थायी कर्मचारी नियुक्त नहीं है और सफाई के लिए संबंधित विभाग को पत्र भेजा गया है। इस बदहाल स्थिति को लेकर भाकियू प्रदेश सचिव राजनाथ यादव, भाकपा जिला मंत्री सालिकराम पटेल, श्याम शंकर पाण्डेय, पंडित अनिल कुमार तिवारी, विपिन पाण्डेय और सीमा सिंह समेत कई लोगों ने जिला प्रशासन से तत्काल सफाई व्यवस्था दुरुस्त कराने और स्थायी कर्मचारी नियुक्त करने की मांग की है।

# जिसकी एके-47 को खिलौना बताकर छोड़ा, वह निकला आतंकी

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

**बिजनौर।** कभी 'खिलौना' बताकर नजरअंदाज किया गया मामला अब राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरे की घंटी बन गया है। बिजनौर पुलिस की एक बड़ी चूक ने न सिर्फ उसकी कार्यप्रणाली पर सवाल खड़े किए हैं, बल्कि यह भी उजागर कर दिया है कि सतही जांच किस तरह आतंकी नेटवर्क को पनपने का मौका दे सकती है। चार महीने पहले जिस युवक को वायरल वीडियो प्रकरण में क्लीनचिट देकर फाइल बंद कर दी गई थी, वही अब एटीएस की जांच में आतंकी कनेक्शन से जुड़ा पाया गया है।

मामला नांगल सोती थाना क्षेत्र के सौफतपुर गांव का है। नवंबर में एक वीडियो वायरल हुआ था, जिसमें गांव निवासी मैजुल के साथ दुबई में बैठा आकिब खान वीडियो कॉल पर कथित तौर पर एके-47 और ग्रेनेड जैसे हथियार दिखाता नजर आया था। वीडियो ने उस समय सनसनी फैलाई थी, लेकिन पुलिस की जांच का निष्कर्ष चौंकाने वाला था। पूछताछ के दौरान आकिब ने हथियारों को 'खिलौना' और ग्रेनेड को 'परफ्यूम की बोतल' बता दिया और पुलिस ने बिना ठोस तकनीकी या फॉरेंसिक जांच के उसके दावे को सच मान लिया। यहीं से शुरू हुई वह चूक, जिसने अब गंभीर रूप ले लिया है।

हाल ही में लखनऊ में एटीएस द्वारा मेरठ और गौतमबुद्धनगर से जुड़े चार संदिग्ध आतंकियों की गिरफ्तारी के बाद जब पूछताछ की परतें खुलीं, तो उसी आकिब खान का नाम फिर सामने आया। जांच में खुलासा हुआ कि दुबई में बैठा आकिब इस पूरे नेटवर्क की अहम कड़ी था। उसने ही मुख्य आरोपी को पाकिस्तान में बैठे आतंकी अबू बकर से जोड़ने का काम किया और स्लीपर मॉड्यूल खड़ा करने में भूमिका निभाई।

यह खुलासा होते ही बिजनौर पुलिस की पुरानी जांच पर सवालों की बौछार शुरू हो गई। जिस वीडियो को हल्के में लिया गया, वही एक बड़े आतंकी नेटवर्क का संकेत साबित हुआ। एटीएस की गहन जांच के बाद यह स्पष्ट हो गया कि यदि उस समय गंभीरता दिखाई जाती, तो शायद इस नेटवर्क को पहले ही ध्वस्त किया जा सकता था।

- बिजनौर पुलिस की 'क्लीनचिट' ने खोली सुरक्षा में सेंध की पोल
- एटीएस की कार्रवाई से उजागर हुआ नेटवर्क, लापरवाही पर गिरी गाज
- थानाध्यक्ष सस्पेंड, सीओ हटाए गए दुबई बैठा आकिब जांच के घेरे में

- वायरल वीडियो में दिखे हथियारों को पुलिस ने बिना फॉरेंसिक जांच 'खिलौना' मान लिया
- एटीएस की कार्रवाई के बाद वही मामला आतंकी नेटवर्क से जुड़ा निकला
- दुबई में बैठा आकिब खान बना अंतरराष्ट्रीय कड़ी, पाकिस्तान कनेक्शन भी सामने
- स्थानीय स्तर की लापरवाही ने बड़े नेटवर्क को पनपने का मौका दिया
- पुलिस अधिकारियों पर कार्रवाई से जवाबदेही तय करने का संकेत
- जांच एजेंसियां अब फंडिंग और स्लीपर सेल नेटवर्क की गहराई तक पहुंचने में जुटीं

### लोकल चूक से कैसे मजबूत होता है इंटरनेशनल नेटवर्क

आकिब खान का दुबई में बैठकर पाकिस्तान स्थित आतंकी से कनेक्शन जोड़ना यह दिखाता है कि आतंकी नेटवर्क अब बहु-स्तरीय और अंतरराष्ट्रीय हो चुका है। ऐसे में स्थानीय पुलिस की एक छोटी सी लापरवाही भी बड़े नेटवर्क को पनपने का मौका दे देती है। बिजनौर केस इसका जीवंत उदाहरण है, जहां एक गांव से जुड़ा मामला वैश्विक साजिश से जा जुड़ा।

मामले की गंभीरता को देखते हुए एसपी अभिषेक झा ने तत्काल प्रभाव से कार्रवाई की। उस समय के थानाध्यक्ष सत्येंद्र मलिक को निलंबित कर दिया गया, जबकि सीओ नजीबाबाद नितेश प्रताप सिंह को पद से हटा दिया गया। यह कार्रवाई साफ संकेत है कि सुरक्षा मामलों में लापरवाही किसी भी स्तर पर बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

वहीं, दुबई में बैठा आकिब खान अब एजेंसियों के रडार पर है। उसने सोशल मीडिया पर वीडियो जारी कर खुद को बेगुनाह बताया है, लेकिन एटीएस और खुफिया एजेंसियां उसकी गतिविधियों, संपर्कों और फंडिंग के स्रोतों की गहराई से जांच कर रही हैं। माना जा रहा है कि आने वाले दिनों में इस नेटवर्क से जुड़े और भी बड़े नाम सामने आ सकते हैं। यह पूरा मामला केवल एक पुलिसिया चूक नहीं, बल्कि सिस्टम की उस कमजोरी को उजागर करता है, जहां सतही जांच और जल्दबाजी में फाइल बंद करने की प्रवृत्ति राष्ट्रीय सुरक्षा को खतरे में डाल सकती है। सवाल यह भी है कि आखिर बिना तकनीकी सत्यापन के एक गंभीर वीडियो को 'खिलौना' मानकर कैसे खारिज कर दिया गया? अब जब एटीएस की जांच ने सच्चाई सामने ला दी है, तो यह जरूरी हो जाता है कि ऐसे मामलों में जवाबदेही तय हो और जांच प्रक्रिया को और अधिक सख्त व वैज्ञानिक बनाया जाए—ताकि भविष्य में कोई 'खिलौना' फिर से 'खतरा' बनकर सामने न आए।

### 'खिलौना' मानने की भूल या जानबूझकर लापरवाही?

बिजनौर पुलिस ने जिस वीडियो को सतही तौर पर देखकर 'खिलौना' मान लिया, वह जांच प्रक्रिया की गंभीर खामी को दर्शाता है। सवाल उठता है कि क्या तकनीकी जांच (वीडियो फॉरेंसिक, लोकेशन ट्रेसिंग, डिजिटल एनालिसिस) की गई थी? यदि नहीं, तो यह सिर्फ चूक नहीं बल्कि ड्यूटी में घोर लापरवाही मानी जाएगी। सुरक्षा से जुड़े मामलों में 'विश्वास' नहीं, 'सत्यापन' जरूरी होता है।

### जवाबदेही तय, लेकिन क्या सिस्टम बदलेगा?

थानाध्यक्ष का सस्पेंशन और सीओ का हटाया जाना कार्रवाई का हिस्सा जरूर है, लेकिन बड़ा सवाल यह है कि क्या इससे सिस्टम में सुधार होगा? अक्सर ऐसे मामलों में निचले स्तर पर कार्रवाई होती है, जबकि जांच की खामियों की जड़ें कहीं गहरी होती हैं ट्रेनिंग, संसाधनों की कमी और मॉनिटरिंग सिस्टम में।

### सोशल मीडिया: आतंकी नेटवर्क का नया हथियार

इस पूरे मामले में वीडियो कॉल और सोशल मीडिया की भूमिका बेहद अहम रही। आतंकी अब पारंपरिक तरीकों से हटकर डिजिटल प्लेटफॉर्म का इस्तेमाल कर रहे हैं। फर्जी नैरेटिव बनाना, 'खिलौना' जैसी कहानी गढ़ना और लोकल पुलिस को गुमराह करना यह सब डिजिटल वॉरफेयर का हिस्सा है। ऐसे में साइबर इंटेलिजेंस को मजबूत करना समय की सबसे बड़ी जरूरत बन गई है।

## चाय बागानों से निकली आस्था की राह अयोध्या में पूरा हुआ जीवन का सपना

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

**अयोध्या।** असम के दूरदराज चाय बागानों में दिनभर मेहनत करने वाली महिला श्रमिकों के लिए रामलला मंदिर के दर्शन किसी सपने के साकार होने जैसा रहा। सीमित संसाधनों और रोजमर्रा की कठिन जिंदगी के बीच जीने वाली इन महिलाओं ने पहली बार अपने राज्य से बाहर निकलकर आस्था की इस यात्रा को महसूस किया।

मनोहारी टी-एस्टेट से आईं अंजली मुरा ने भावुक होकर बताया कि उनका जीवन अब तक चाय बागान तक ही सीमित रहा—सुबह से शाम तक पत्तियां तोड़ना और परिवार की जिम्मेदारियां निभाना ही दिनचर्या थी। उन्होंने कहा कि कभी कल्पना भी नहीं की थी कि वे इतने दूर आकर भगवान राम के दर्शन कर सकेंगी। श्रमिक निभा धान ने बताया कि एक अप्रैल को जब नरेंद्र मोदी चाय बागान पहुंचे थे और उनके साथ काम किया था, तभी अयोध्या यात्रा की चर्चा शुरू हुई। इस प्रस्ताव ने सभी श्रमिकों में नई उम्मीद जगा दी और अंततः यह यात्रा संभव हो सकी।

अन्य महिलाओं ने भी साझा किया कि उन्होंने पहले कभी असम से बाहर कदम नहीं रखा था। बाहरी दुनिया उनके लिए किसी आश्चर्य से कम नहीं थी। लेकिन अयोध्या पहुंचकर उन्हें न सिर्फ धार्मिक संतोष मिला, बल्कि आत्मविश्वास और नई ऊर्जा भी मिली। यह यात्रा यहीं समाप्त नहीं होगी। यह दल आगे वाराणसी, सोमनाथ मंदिर और रामेश्वरम जैसे प्रमुख तीर्थ स्थलों के दर्शन भी करेगा। इस अनुभव ने इन श्रमिक महिलाओं के जीवन में आस्था, उत्साह और उम्मीद की नई रोशनी भर दी।

## चुनाव ड्यूटी पर निकले सीआरपीएफ जवानों ने अयोध्या में किए रामलला के दर्शन

स्वराज इंडिया न्यूज ब्यूरो

**अयोध्या।** कर्तव्य और आस्था का अद्भुत संगम उस समय देखने को मिला, जब विधानसभा चुनाव ड्यूटी पर निकले केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के जवानों का काफिला अयोध्या में अचानक रुक गया। जम्मू-कश्मीर से असम, पश्चिम बंगाल और अन्य राज्यों की ओर बढ़ रहे इन जवानों ने रास्ते में प्रभु श्रीराम की नगरी में ठहरकर रामलला के दर्शन-पूजन किए।

रविवार दोपहर करीब तीन बजे टेढ़ी बाजार ओवरब्रिज पर एक के बाद एक खड़े बख्तरबंद वाहनों की लंबी कतार ने स्थानीय लोगों का ध्यान अपनी ओर खींच लिया। भारी सुरक्षा व्यवस्था और सशस्त्र जवानों की मौजूदगी से कुछ देर के लिए इलाके में कौतूहल का माहौल बन गया। राहगीर और स्थानीय निवासी यह जानने को उत्सुक हो उठे कि आखिर यह काफिला अचानक यहां क्यों रुक गया। बाद में सामने आया कि यह काफिला सीआरपीएफ जवानों का था, जो विभिन्न राज्यों में विधानसभा चुनावों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था संभालने के लिए जा रहे थे। करीब पांच दर्जन से अधिक जवानों ने अपने वाहनों को सुव्यवस्थित तरीके से खड़ा किया और रामजन्मभूमि पथ के सामान्य मार्ग से मंदिर की ओर बढ़ गए। खास बात यह रही कि जवानों ने किसी विशेष व्यवस्था या प्रोटोकॉल का सहारा नहीं लिया। उन्होंने आम श्रद्धालुओं की तरह ही कतार में लगकर अपनी बारी का इंतजार किया और विधि-विधान से रामलला के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। इस दौरान उनके चेहरों पर भक्ति और श्रद्धा साफ झलक रही थी। रामजन्मभूमि परिसर के एसपी सुरक्षा बलरामाचारी दुबे ने बताया कि जवानों के आगमन की कोई पूर्व सूचना नहीं थी। उन्होंने पूरी तरह सामान्य श्रद्धालुओं की तरह ही मंदिर में प्रवेश कर दर्शन किए। वहीं, परिसर में तैनात सीआरपीएफ के असिस्टेंट कमांडेंट विनय सिंह ने भी स्पष्ट किया कि इस धार्मिक पड़ाव की जानकारी उन्हें पहले से नहीं थी। अचानक पहुंचे इस काफिले ने जहां एक ओर लोगों को चौंकाया, वहीं दूसरी ओर श्रद्धा का वातावरण भी पैदा कर दिया। स्थानीय लोगों ने जवानों के इस कदम को कर्तव्य के साथ आस्था के संतुलन का सुंदर उदाहरण बताया। ड्यूटी की कठोरता के बीच कुछ पल भक्ति के लिए निकालकर इन जवानों ने यह संदेश भी दिया कि देश सेवा के साथ-साथ अपनी आस्था से जुड़े रहना भी उनके जीवन का अहम हिस्सा है।

- जम्मू-कश्मीर से असम-बंगाल जा रहे काफिले ने अचानक लिया मोड़
- बख्तरबंद वाहनों की कतार देख चौंके लोग, कतार में लगकर किया पूजन

# ट्रंप की 'मंगलवार डेडलाइन' और दुनिया पर मंडराता परमाणु खतरा

## खाड़ी में बारूद का ढेरः बुशहर पर हमले

**स्वराज इंडिया न्यूज डेस्क**

**नई दिल्ली।** पश्चिम एशिया में जारी संघर्ष अब निर्णायक और बेहद खतरनाक मोड़ पर पहुंचता दिख रहा है। अमेरिका और इजरायल की ओर से ईरान के रणनीतिक ठिकानों पर लगातार हो रहे हमलों ने हालात को विस्फोटक बना दिया है। खासतौर पर बुशहर परमाणु संयंत्र पर चौथी बार हुए हमले के बाद ईरान ने वैश्विक स्तर पर गंभीर चेतावनी जारी कर दी है। इसी बीच अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार तक की अंतिम समय-सीमा तय करते हुए ईरान को खुली धमकी दी है कि यदि उसकी शर्तें नहीं मानी गईं, तो ईरान के पावर प्लांट और पुलों को निशाना बनाया जाएगा।

यह घटनाक्रम न सिर्फ सैन्य टकराव का संकेत दे रहा है, बल्कि अब यह संघर्ष आम नागरिकों, ऊर्जा आपूर्ति और वैश्विक अर्थव्यवस्था को सीधे प्रभावित करने की दिशा में बढ़ चुका है। ईरान का बुशहर परमाणु संयंत्र इस पूरे संघर्ष का केंद्र बन चुका है। लगातार चार बार हुए हमलों के बाद ईरान ने आशंका जताई है कि यदि यह सिलसिला जारी रहा, तो रेडियोधर्मी विकिरण का खतरा पूरे खाड़ी क्षेत्र को अपनी चपेट में ले सकता है। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची ने पश्चिमी देशों पर दोहरे मापदंड अपनाने का आरोप लगाते हुए कहा कि जहां यूक्रेन के परमाणु संयंत्रों पर हमलों को लेकर रूस की आलोचना की जाती है, वहीं ईरान के मामले में अमेरिका और इजरायल की कार्रवाई पर चुप्पी साध ली जाती है। उन्होंने इसे 'खतरनाक पाखंड' करार दिया। ईरान ने इस मुद्दे को लेकर संयुक्त राष्ट्र को औपचारिक पत्र भी भेजा है, जिसमें चेतावनी दी गई है कि इस तरह के हमले पूरे क्षेत्र को परमाणु आपदा की ओर धकेल सकते हैं।

### होर्मुज संकटः दुनिया की अर्थव्यवस्था पर सीधा वार

यदि होर्मुज जलडमरूमध्य बंद होता है, तो तेल की कीमतें रिकॉर्ड स्तर पर पहुंच सकती हैं। इसका असर भारत समेत कई तेल आयातक देशों की अर्थव्यवस्था पर गंभीर होगा।

### पावर प्लांट और पुल उड़ाने की खुली धमकी, होर्मुज पर तनाव चरम पर, ईरान की चेतावनी से वैश्विक संकट गहराया

- बुशहर परमाणु संयंत्र पर लगातार चौथी बार हमला
- ईरान ने रेडियोधर्मी खतरे को लेकर वैश्विक चेतावनी जारी की
- डोनाल्ड ट्रंप ने मंगलवार तक का अल्टीमेटम दिया
- पावर प्लांट और पुलों को उड़ाने की खुली धमकी
- होर्मुज जलडमरूमध्य पर ईरान का कड़ा नियंत्रण
- वैश्विक तेल आपूर्ति और कीमतों पर सीधा असर
- संयुक्त राष्ट्र में ईरान की औपचारिक शिकायत

### ट्रंप का अल्टीमेटमः 'मंगलवार के बाद कुछ भी हो सकता है'

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान को लेकर बेहद आक्रामक रुख अपनाया है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि मंगलवार तक यदि ईरान ने होर्मुज जलडमरूमध्य को नहीं खोला और अमेरिकी शर्तें नहीं मानीं, तो अमेरिका ईरान के महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे को निशाना बनाएगा। ट्रंप ने अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर 'पावर प्लांट डे' और 'ब्रिज डे' जैसे शब्दों का इस्तेमाल करते हुए संकेत दिया कि अब हमले सिर्फ सैन्य ठिकानों तक सीमित नहीं रहेंगे, बल्कि आम जनजीवन को प्रभावित करने वाली संरचनाओं पर भी केंद्रित होंगे। उन्होंने यहां तक कहा कि यदि समझौता नहीं हुआ, तो अमेरिका ईरान के तेल संसाधनों पर कब्जा करने से भी पीछे नहीं हटेगा।

### वैश्विक चिंता और कूटनीतिक दबाव

संयुक्त राष्ट्र सहित कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं ने इस स्थिति पर चिंता जताई है। यूरोपीय देशों ने भी संयम बरतने की अपील की है, लेकिन जमीनी हालात तेजी से बिगड़ते दिख रहे हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि जल्द ही कूटनीतिक समाधान नहीं निकला, तो यह संकट पूरे विश्व को आर्थिक और मानवीय आपदा में धकेल सकता है। पश्चिम एशिया का यह संकट अब केवल क्षेत्रीय टकराव नहीं रह गया है, बल्कि यह वैश्विक सुरक्षा, ऊर्जा आपूर्ति और मानवता के लिए बड़ा खतरा बनता जा रहा है। डोनाल्ड ट्रंप की मंगलवार डेडलाइन और ईरान की चेतावनियों के बीच दुनिया एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहां से आगे का हर कदम इतिहास की दिशा तय कर सकता है।

### होर्मुज जलडमरूमध्यः वैश्विक अर्थव्यवस्था की नस पर दबाव

इस पूरे तनाव का केंद्र होर्मुज जलडमरूमध्य बना हुआ है। दुनिया का लगभग 20ब कच्चा तेल इसी मार्ग से होकर गुजरता है। फरवरी 2026 से जारी तनाव के बीच ईरान ने इस पर कड़ा नियंत्रण स्थापित कर लिया है, जिससे वैश्विक तेल आपूर्ति प्रभावित हो रही है। तेल की कीमतों में उछाल ने पहले ही कई देशों की अर्थव्यवस्था को झटका दिया है। यदि यह मार्ग पूरी तरह बाधित होता है, तो वैश्विक ऊर्जा संकट गहरा सकता है।

### जमीन से ज्यादा अब 'इन्फ्रास्ट्रक्चर वॉर' का खतरा

अब तक के संघर्ष में सैन्य ठिकानों को निशाना बनाया जा रहा था, लेकिन ट्रंप की नई चेतावनी ने संकेत दे दिया है कि युद्ध की रणनीति बदल रही है। पावर प्लांट, पुल और तेल संरचनाओं पर हमले सीधे आम नागरिकों को प्रभावित करेंगे। यह बदलाव इस संघर्ष को 'फुल-स्केल वार' के करीब ले जा सकता है, जहां नागरिक ढांचे भी सुरक्षित नहीं रहेंगे।

### क्या कूटनीति के दरवाजे बंद हो रहे हैं?

हालांकि बातचीत की बात हो रही है, लेकिन जिस तरह दोनों पक्ष आक्रामक बयानबाजी कर रहे हैं, उससे लगता है कि कूटनीतिक समाधान की संभावना कमजोर होती जा रही है। अगर यही स्थिति रही, तो यह संघर्ष क्षेत्रीय युद्ध से वैश्विक संकट में बदल सकता है।

### क्या परमाणु आपदा की ओर बढ़ रहा है संकट?

बुशहर संयंत्र पर बार-बार हमले यह संकेत देते हैं कि परमाणु सुरक्षा अब गंभीर खतरे में है। यदि किसी हमले से रिएक्टर को नुकसान पहुंचता है, तो यह चेरनोबिल जैसी आपदा का रूप ले सकता है, जिसका असर कई देशों तक फैल सकता है।

### ट्रंप की रणनीतिः दबाव या युद्ध की तैयारी?

बार-बार समय-सीमा तय करना और फिर उसे बढ़ाना ट्रंप की 'मैक्सिमम प्रेशर' रणनीति का हिस्सा रहा है। लेकिन इस बार इन्फ्रास्ट्रक्चर को निशाना बनाने की चेतावनी यह दिखाती है कि अमेरिका अब निर्णायक कार्रवाई के मूड में है।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक **सपना देवी** द्वारा हर्षिता प्रिंटर्स 127/875, साकेत नगर, कानपुर नगर- (उप्र) से मुद्रित व 119/13, दर्शनपुरवा, कानपुर नगर- 208012 (उप्र) से प्रकाशित। **संपादकः अनूप कुमार** **RNI No.:** UPHIN/2023/86769 ❍ **Email:** swarajindia2023@gmail.com ❍ Mob: 7800009853,
❍ **Website:** www.swarajindianews.com ❍ (समस्त वाद-विवाद कानपुर न्यायालय के अधीन होंगे) **प्रधान संपादकः पुरुषोत्तम द्विवेदी**

ई-पेपर पढ़ने के लिए क्लिक करें
https://epaper.swarajindianews.com